जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर, गुरुवार 25 सितम्बर, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

सेवा ही संकल्प,
राष्ट्र प्रथम ही प्रेरणा... 75 वर्ष

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

विकास पथ पर
आपणो अग्रणी राजस्थान...

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर

2800 मेगावाट की परमाणु विद्युत परियोजना सहित

राजस्थान को 1 लाख 8 हजार करोड़ रुपए की परमाणु विद्युत, अक्षय ऊर्जा, रेल, सड़क, पेयजल, सिंचाई, सीवरेज, स्वास्थ्य एवं अन्य परियोजनाओं का उपहार

15 हजार युवाओं को
सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्रों का वितरण

जोधपुर, बीकानेर एवं उदयपुर
से नई ट्रेनों की शुरुआत

मुख्य अतिथि

नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री

शिलान्यास

- बीकानेर जिले में 590 मेगावाट की अक्षय ऊर्जा परियोजना (8,500 करोड़ रुपए)
- जैसलमेर, बाड़मेर, सिरोही, नागौर व बीकानेर में 15.5 गीगावाट क्षमता की विद्युत प्रसारण लाइनें (13,183 करोड़ रुपए)
- राजसमन्द, डूंगरपुर, चितौड़गढ़, अजमेर, टोंक, जयपुर, भरतपुर, अलवर जिलों में जल संसाधन में रामजल सेतु परियोजना के 9 कार्य (18,468 करोड़ रुपए)
- बांसवाड़ा, उदयपुर, डूंगरपुर, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, बाड़मेर, दौसा, चूरू, अजमेर, भीलवाड़ा, सीकर जिलों में 15 पेयजल परियोजनाएं (5,884 करोड़ रुपए)
- भरतपुर में 2 फ्लाईओवर, बनास नदी पर पुल निर्माण तथा 119 अटल प्रगति पथों का निर्माण (878 करोड़ रुपए)
- बीकानेर एवं जैसलमेर जिलों में 220 केवी के 3 जीएसएस व सम्बन्धित लाइनों के कार्य (348 करोड़ रुपए)

लोकार्पण

- 1400 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजनाएं एवं 925 मेगावाट का नोख सोलर पार्क, फलौदी (10710 करोड़ रुपए)
- पीएम कुसुम-सी के तहत 895 मेगावाट के विकेन्द्रीकृत सौर ऊर्जा संयंत्र (3,132 करोड़ रुपए)
- ईसरदा बांध, धौलपुर लिफ्ट, बत्तीसानाला एवं अन्य सिंचाई परियोजनाओं के कार्य (2,365 करोड़ रुपए)
- बाड़मेर, अजमेर, ब्यावर, डूंगरपुर, भर्तृहरि नगर, बांसवाड़ा, राजसमन्द, उदयपुर जिलों में 7 सड़कों के कार्य (1,758 करोड़ रुपए)
- बाड़मेर जिले में 220 केवी जीएसएस व लाइन निर्माण (142 करोड़ रुपए)
- डीडवाना-कुचामन में सीवरेज एवं झुंझुनूं में सीवरेज व जल प्रदाय परियोजना का कार्य (226 करोड़ रुपए)
- आई.टी. डवलपमेन्ट एण्ड ई-गवर्नेन्स सेन्टर (140 करोड़ रुपए)
- भरतपुर में आरबीएम चिकित्सालय में 250 बैडेड अस्पताल (128 करोड़ रुपए)

राजस्थान संवाद

गरिमामयी उपस्थिति

हरिभाऊ किसनराव बागडे
माननीय राज्यपाल, राजस्थान

भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान

प्रह्लाद जोशी
केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री

डी.डी. न्यूज़ पर लाइव प्रसारण

गुरुवार, 25 सितम्बर, 2025 | दोपहर 12:00 बजे | नापला, छोटी सरवन (बांसवाड़ा)

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 324 प्रभात उदयपुर, गुरूवार 25 सितम्बर, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

प्रधानमंत्री आज बाँसवाड़ा में परमाणु ऊर्जा परियोजना का शिलान्यास करेंगे

मुख्यमंत्री भजनलाल ने प्रधानमंत्री की यात्रा की तैयारियों का विस्तृत निरीक्षण किया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को बांसवाड़ा के नापला में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लिया। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ भी मौजूद थे।

जयपुर (कासं), 24 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 25 सितंबर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर बांसवाड़ा दौरे पर रहेंगे। इस दौरान मोदी, राजस्थान को 1 लाख 8 हजार 468 करोड़ रुपए से अधिक की परियोजनाओं की सौगात देंगे। साथ ही 1 लाख 22 हजार 670 करोड़ रुपए की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण भी करेंगे।

बुधवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बांसवाड़ा के नापला पहुंचे। उन्होंने

- **प्रधानमंत्री जल संसाधन विभाग की 20,833 करोड़ रूपए की परियोजनाओं का भी शिलान्यास करेंगे। इनमें ईसरदा के जयपुर, भरतपुर और अलवर जिलों तक फीडर निर्माण, बीसलपुर व ब्रह्मणी बैराज जैसे महत्वपूर्ण जल प्रोजैक्ट शामिल हैं।**

प्रधानमंत्री मोदी के प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों का अवलोकन करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने पेयजल, पार्किंग व्यवस्था तथा जनसभा में आमजन के बैठने की तैयारियों की जानकारी ली। साथ ही पीएम कुसुम योजना के लाभार्थियों से संवाद को लेकर की गई तैयारियों का भी जायजा लिया। इस अवसर पर सांसद मदन राठौड़, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा, अतिरिक्त मुख्य सचिव, सार्वजनिक निर्माण प्रवीण गुप्ता सहित संभागीय व जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

ज्ञात रहे कि गुरूवार को प्रधानमंत्री बांसवाड़ा में 42 हजार करोड़ रुपए की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एसआई पेपर लीक मामले में 3 और प्रोबेशनर गिरफ्तार

जयपुर, 24 सितम्बर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने सब इंस्पेक्टर (एसआई) परीक्षा-2021 पेपर लीक मामले में कार्रवाई करते हुए तीन और प्रोबेशनर (ट्रेनी) एसआई को गिरफ्तार किया है। जांच के दौरान एसओजी को कुछ सबूत मिले, जिसके आधार पर तीनों को पूछताछ के लिए मुख्यालय बुलाया गया और फिर तीनों ट्रेनी एसआई को गिरफ्तार कर लिया गया। तीनों सॉल्व पेपर पढ़कर परीक्षा पास करने का आरोप है, एसओजी इस

- **एसओजी को प्राप्त सबूतों के अनुसार, तीनों पर लीक हुए सॉल्व पेपर पढ़कर एसआई भर्ती में चयनित होने का आरोप है।**

मामले में लगातार कार्रवाई कर रही है और अब तक 59 प्रोबेशनर एसआई समेत 130 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजी एसओजी) वीके सिंह ने बताया कि एसआई भर्ती परीक्षा-2021 पेपर लीक मामले में कार्रवाई करते हुए परमेश चौधरी (26) निवासी मालियों की ढाणी, ग्राम त्योदा, थाना सांभर, जयपुर ग्रामीण, वर्तमान में पुलिस लाइन टोंक; मनोहर सिंह (25) निवासी ग्राम सेडीया, थाना करडा, जालोर, वर्तमान में पुलिस लाइन कोटा शहर, और मनोहर लाल (26) निवासी वियो का गोलिया, ग्राम पुनासा, थाना भीनमाल, जालोर, वर्तमान में पुलिस लाइन सिरोही में तैनात को गिरफ्तार किया है।

एसओजी-एटीएस के एडीजी वीके सिंह ने बताया कि अनुसंधान में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मल्लिकार्जुन खड़गे दो साल के शासन के बाद ही थके-थके क्यों हैं?

वे पुराने बुर्जुग नेताओं, जैसे अंबिका सोनी, मीरा कुमार आदि की विदाई नहीं कर पाये, सीडब्ल्युसी से और न ही गौरव गोगोई, रणदीप सुरजेवाला, चरणजीत सिंह चन्नी को शिफ्ट कर पाये

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 सितम्बर। भले ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के 88वें अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे अगले महीने अपने कार्यकाल के तीन वर्ष पूरे करने जा रहे हों, लेकिन कांग्रेस पर लंबे समय से नजर रखने वाले एक पर्यवेक्षक का कहना है कि यह पार्टी अभी भी अनिश्चित भविष्य, निष्क्रियता और कई राज्यों में आंतरिक खींचतान से जूझ रही है - हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान से लेकर असम, केरल और बंगाल तक, जहां अगले वर्ष की शुरुआत में विधानसभा चुनाव होने हैं।

पिछले छह महीनों से भी अधिक समय से कांग्रेस नेतृत्व, जिसमें खड़गे और गांधी परिवार शामिल हैं, कांग्रेस कार्य समिति (सी.डब्ल्यु.सी.) के कुछ उम्रदराज सदस्यों को हटाकर नए नेताओं को जगह देने में विफल रहे हैं। इन नए नेताओं में शामिल हैं: रजनी पाटिल (हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ की प्रभारी), बी.के. हरिप्रसाद (हरियाणा), हरीश चौधरी (मध्य प्रदेश), गिरीश चोडनकर (तमिलनाडु और पुडुचेरी), अजय कुमार लल्लू (ओडिशा), के. राजू (झारखंड), मीनाक्षी नटराजन (तेलंगाना), सप्तगिरी शंकर उलक (मणिपुर, त्रिपुरा, सिक्किम और नागालैंड), और कृष्ण अल्लावरु (बिहार)।

- **एंटनी, अंबिका सोनी, मीरा कुमार के सीडब्ल्युसी में बने रहने का कारण है, सोनिया गांधी से नज़दीकी। गोगोई, सुरजेवाला व चन्नी अपने-अपने प्रदेश में कांग्रेस के मु.मंत्री का चेहरा बनना चाहते हैं। अतः उन्हें भी सीडब्ल्युसी से हटाकर, उनका महत्व कम करने का कोई मतलब नहीं निकलता।**
- **खड़गे की टीम, रजनी पटेल, हरिप्रसन्न, हरीश चौधरी, गिरीश चौडनकर, अजय कुमार लालू, के.राजू, मीनाक्षी नटराजन, सप्तगिरी और कृष्णा अल्लूवारु, अभी पूर्ण महत्व नहीं पा सके।**
- **इस असमंजस की स्थिति में कांग्रेस की सभी प्रांतीय इकाईयों में आंतरिक कलह खत्म होने का नाम नहीं लेती और बाकायदा बरकरार है।**
- **और यह ही कारण है कि राहुल गांधी की 1,300 किलोमीटर ''वोट अधिकार यात्रा'' काफी सफल रही, पर अंतर्कलह के कारण सफलता को वोटों में तब्दील करना मुश्किल हैं।**

सोनिया गांधी के करीबी माने जाने वाले ए. के. एंटनी, अंबिका सोनी, मीरा कुमार और कुछ अन्य अब भी बने हुए हैं और गौरव गोगोई, रणदीप सुरजेवाला और चरणजीत सिंह चन्नी को हटाने की कोशिशें भी आंतरिक समीकरणों के चलते सफल नहीं हो पाईं। गौरव गोगोई असम में पार्टी का चेहरा हो सकते हैं, जबकि सुरजेवाला और चन्नी क्रमशः हरियाणा और पंजाब में पार्टी की कमान संभालना चाहते हैं।

कांग्रेस के संविधान के अनुसार, एआईसीसी के महासचिवों का सीडब्ल्युसी सदस्य होना आवश्यक है। जब तक उन्हें सीडब्ल्युसी में नहीं लिया जाता, तब तक उन्हें ''प्रभारी'' की उपाधि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'बिहार का मानस बदलाव का है, परिवर्तन निश्चित है'

कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने पटना में सीडब्ल्युसी की बैठक के बाद प्रेसवार्ता में कहा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 सितंबर। कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने बुधवार को कहा कि बिहार में बदलाव निश्चित है और उन्होंने चुनाव आयोग से आगामी विधानसभा चुनावों को निष्पक्ष, स्वतंत्र और पारदर्शी तरीके से कराने की जिम्मेदारी निभाने का आग्रह किया।

पायलट ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर निशाना साधते हुए अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा लगाए गए टैरिफ और एच-1बी वीज़ा शुल्क में एकमुश्त बढ़ोतरी जैसे फैसलों का हवाला देते हुए कहा कि दोनों नेताओं की दोस्ती भारत के लिए ''बहुत महंगी'' साबित हो रही है।

सचिन पायलट ने पटना के ऐतिहासिक सदाकत आश्रम में कांग्रेस कार्यसमिति की विस्तारित बैठक के बाद

- **पायलट ने आयोग से कहा कि बिहार में वोट अधिकार यात्रा को भारी समर्थन मिला है और कांग्रेस पूरी ताकत से चुनाव लड़ेगी।**
- **तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने पर पायलट ने कहा, समय आने पर इस बारे में निर्णय लिया जाएगा।**
- **पायलट ने जीएसटी पर पूछे सवाल के जवाब में कहा, कांग्रेस और राहुल गांधी शुरु से कह रहे थे, यह गब्बर सिंह टैक्स है, एक गलती को सुधारने में 8 साल लग गए।**

आयोजित प्रेस वार्ता में यह बयान दिया। इस बैठक की अध्यक्षता कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने की।

सचिन पायलट ने कहा, 2017 से लगातार आठ वर्षों तक कांग्रेस और राहुल गांधी ने इसे ''गब्बर सिंह टैक्स'' कहा और गलतियों की ओर इशारा किया। जब मनमोहन सिंह सरकार जीएसटी लाना चाहती थी, तब भाजपा ने इसका विरोध किया और सत्ता में आते ही यू-टर्न ले लिया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

17 फरवरी से होंगी सीबीएसई बोर्ड परीक्षाएं

नयी दिल्ली, 24 सितंबर। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने 2026 में होने वाली 10वीं और 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं के लिए बुधवार को संभावित तारीख घोषित की।

सीबीएसई की ओर से जारी संभावित तारीखों के अनुसार बोर्ड

- **सीबीएसई ने 2026 से होने वाली 10 वीं 12 वीं बोर्ड की परीक्षाओं का कार्यक्रम घोषित किया है कार्यक्रम के अनुसार 17 फरवरी से 15 मार्च के बीच बोर्ड परीक्षाएं आयोजित की जाएगी।**

परीक्षाएं 17 फरवरी से 15 मार्च 2026 के बीच आयोजित हो सकती हैं। उन्होंने बताया है कि इन परीक्षाओं में 45 लाख से अधिक विद्यार्थी हिस्सा ले

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट ने एस.आई. भर्ती रद्द करने पर अंतरिम रोक हटाई

शीर्ष अदालत ने आदेश में कहा कि, ''राजस्थान हाईकोर्ट की खंडपीठ 3 माह में इस मामले की सुनवाई कर दायर अपीलों का निस्तारण करे''

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 24 सितंबर। सुप्रीम कोर्ट ने 859 पदों की एस.आई. भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में राजस्थान हाईकोर्ट की खंडपीठ के 8 सितंबर के उस अंतरिम आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें चयनित अभ्यर्थियों को ट्रेनिंग कराने की छूट दी गई थी। शीर्ष अदालत ने, हाईकोर्ट की खंडपीठ को कहा है कि वह इस मामले में दायर अपीलों का निपटारा 3 महीने में करे।

सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि खंडपीठ के समक्ष मूल अपीलों में अंतिम फैसला नहीं होने तक किसी भी चयनित अभ्यर्थी को ट्रेनिंग नहीं दी जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्देश बुधवार को कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की एसएलपी पर दिया।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में दायर

- **हाईकोर्ट की खंडपीठ द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को ट्रेनिंग की छूट देने के आदेश पर भी रोक लगाई।**
- **ज्ञात रहे कि एकलपीठ ने एस.आई.भर्ती पेपरलीक मामले में एस.आई.टी की जांच रिपोर्ट को आधार बनाते हुए 28 अगस्त को इस परीक्षा को रद्द करने के आदेश दिए थे।**
- **इस रिपोर्ट में यह भी स्पष्ट था कि आर.पी.एस.सी. के सदस्य स्वयं पेपरलीक में लिप्त थे और उन्होंने अपने पुत्र-पुत्री समेत कई लोगों को पेपर मुहैया करवाया था।**

अपील में याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता राजीव शकधर और उनके सहायक अधिवक्ता हरिंदर नील पैरवी के लिए उपस्थित हुए थे।

याचिकाकर्ताओं की ओर से सीनियर एडवोकेट राजीव शकधर ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि, राजस्थान हाईकोर्ट की खंडपीठ ने एकलपीठ के आदेश पर रोक लगाते हुए चयनित अभ्यर्थियों को फील्ड ट्रेनिंग कराने की छूट दी है। जबकि फील्ड ट्रेनिंग में कुछ हद तक ट्रेनी एस.आई. को स्वतंत्र निर्णय और काम करने की छूट दी जाती है। याचिकाकर्ताओं का कहना था कि एकलपीठ ने पेपरलीक की जांच के संबंध में गठित एस.आई.टी. रिपोर्ट का गंभीरता से विश्लेषण कर परीक्षा रद्द करने और आर.पी.एस.सी. अधिकारियों को 2021 में जारी विज्ञिप्ति के आधार पर पुनः परीक्षा आयोजित करने का प्रस्ताव राज्य सरकार को भिजवाने के आदेश दिए थे।

याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया है कि, यह मामला जनहित से जुड़ा हुआ है और मामले की जांच में स्पष्ट हुआ है कि एस.आई. भर्ती परीक्षा के पेपरलीक में स्वयं आर.पी.एस.सी. के सदस्य लिप्त थे। इन्हीं आरपीएससी सदस्यों के पुत्र-पुत्री को प्रश्नपत्र उपलब्ध करवाए गए थे, इन्हीं पेपर्स को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रेल कर्मचारियों को मिलेगा 78 दिन का बोनस

नयी दिल्ली, 24 सितंबर। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने रेल कर्मचारियों को दीपावली पर 78 दिन का बोनस देने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

सूचना प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को यहां संवाददाता

- **रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने कैबिनेट की मीटिंग में इस प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी है।**

सम्मेलन में यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में इस आशय के प्रस्ताव को मंजूरी दी गयी है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारतीय आईटी प्रोफैशनल्स अब कैनडा, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, इंगलैण्ड, यूएई, सिंगापुर की ओर भी देख रहे हैं

पर, ये देश एक समान नहीं, नौकरियों की दृष्टि से

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 सितम्बर। अमेरिका द्वारा प्रस्तावित नई वेतन-आधारित एच-1 बी वीज़ा चयन प्रणाली भारत के कई युवा प्रोफैशनल्स और एम्प्लॉयर्स को अन्य विकल्पों की तरफ रुख करने पर मजबूर करेगी।

इस नई व्यवस्था में लैवल 1 और लैवल 2 वेतन वाली नौकरियों के आवेदकों की चयन की संभावना घट जाएगी। यह वो ब्रैकेट (श्रेणी) है जिसमें हाल ही में स्नातक बने, जूनियर सॉफ्टवेयर इंजीनियर और प्रवेश-स्तरीय आईटी नौकरियां आती हैं। इससे अमेरिका अब शुरुआती करियर वाले प्रोफैशनल्स और उन स्टार्टअप्स के लिए कम आकर्षक हो जाएगा जो बड़ी टेक कंपनियों जैसी सैलरी नहीं दे सकते।

यह प्रस्ताव, जिसमें एक बड़ा नया शुल्क भी शामिल है, उम्मीदवारों और एम्प्लॉयर्स को सस्ते, आसान और तेज़ विकल्पों की ओर रुख करने को मजबूर करेगा।

कैनडा इस बदलाव का सबसे बड़ा तात्कालिक लाभार्थी दिख रहा है। उसका ''एक्सप्रेस एंट्री'' पॉइंट सिस्टम और प्रांतीय नामांकन कार्यक्रम (प्रोविंशियल नॉमिनी प्रोग्राम) टैंपटेरी वर्क से परमानैंट रैज़िडैंसी तक जाने का साफ और तेज़ रास्ता देता है। ग्लोबल टैलेंट स्ट्रीम से एम्प्लॉयर्स बहुत जल्दी वर्क परमिट दिला सकते हैं। कैनडा पहले से ही अपनी छवि ''कुशल प्रतिभा के अनुकूल'' देश की बना चुका है और अमेरिकी नीतिगत कदमों के बाद से भर्ती एजेंसियां कैनडा को एच -1 बी का विकल्प बताकर प्रचार कर रही हैं। उन भारतीयों के लिए, जो आसान स्थायी निवास (परमानैंट रेज़िडैंसी/ पी.आर.) और परिवार की स्थिरता चाहते हैं, कैनडा सबसे आकर्षक नज़र आता है।

- **कैनडा व आस्ट्रेलिया में नौकरी पेशे वालों के लिए एंट्री साफ-सुथरी है, जटिलताएं कम हैं।**
- **यूरोप (जर्मनी, ब्रिटेन) में नये एंट्री लैवल आईटी प्रोफैशनल्स के लिये, यूरोप की लाइफ स्टाइल एक आकर्षण है। पर, जर्मनी में भाषा की दिक्कत जरूर है।**
- **सिंगापुर व यूएई में वेतन भी ठीक है तथा भारत से कम दूरी एक अच्छा विकल्प प्रस्तुत करते हैं।**
- **ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया व सिंगापुर थोड़े सीनियर व अच्छा वेतन पाने वाले प्रोफैशनल्स के लिये ज्यादा आकर्षण हैं। पर, एंट्री लैवल के प्रोफैशनल्स के लिए सिंगापुर व ऑस्ट्रेलिया थोड़े पहुँच से दूर हैं।**

ऑस्ट्रेलिया अब भी उन मिड-करियर प्रोफैशनल्स को आकर्षित करता है जो पॉइंट सिस्टम की तय शर्तें पूरी कर सकते हैं। सरकार समय-समय पर अपनी ''स्किल्ड ऑक्यूपेशन लिस्ट'' अपडेट करती है और हाल ही में वीज़ा रुल्स को उन क्षेत्रों को प्राथमिकता देने के लिए बदला गया है जहां कर्मचारियों की कमी है। कई स्किल्ड माइग्रैंट्स के लिए ऑस्ट्रेलिया में स्थायी निवास (पी.आर.) का रास्ता साफ है, पर यह प्रक्रिया कैनडा से धीमी और अधिक नियमबद्ध हो सकती है, और कुछ वीज़ा में वेतन की न्यूनतम सीमा काफ़ी ऊँची हो सकती है।

जर्मनी का ई.यू. ब्लू कार्ड, तय वेतन सीमा और त्वरित स्थायी निवास (पी.आर.) विकल्पों के साथ, इंजीनियरों और डेटा वैज्ञानिकों के लिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राज्यसभा की 5 सीटों का चुनाव 24 अक्टूबर को

नयी दिल्ली, 24 सितम्बर। केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर से चार तथा पंजाब से एक राज्यसभा सीट के लिए 24 अक्टूबर को मतदान कराया जाएगा।

चुनाव आयोग ने बुधवार को यह

- **केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर की चार तथा पंजाब की एक राज्यसभा सीट के लिए 13 अक्टूबर को नामांकन भरा जाएगा।**

जानकारी देते हुए बताया कि इस बारे में छह अक्टूबर को अधिसूचना जारी की जाएगी और 13 अक्टूबर तक उम्मीदवार नामांकन कर सकेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भजन लाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

विकास के नए शिखर पर राजस्थान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
सेवा ही संकल्प,
राष्ट्र प्रथम ही प्रेरणा...75 वर्ष

₹1,22,000 करोड़ से अधिक की परमाणु, अक्षय ऊर्जा, बिजली, रेल और इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी परियोजनाओं का उपहार

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
के द्वारा

गुरुवार, 25 सितम्बर, 2025 | 13:00 बजे | बाँसवाड़ा, राजस्थान

केन्द्र सरकार की स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाएं

शिलान्यास

- अश्विनी माही बाँसवाड़ा राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना 1-4 (4x700 MW)
- 590 MW एफडीआरई परियोजना (1560 MWp सौर तथा 2500 MWh बीईएसएस), बीकानेर (अवाडा)
- पावरग्रिड की तीन पारेषण योजनाएँ, राजस्थान से मध्य प्रदेश, हरियाणा और पंजाब तक 15.5 GW अक्षय ऊर्जा की निकासी हेतु
- 300 MW सौर पीवी परियोजना, रामगिरि, आंध्र प्रदेश (सेकी)

उद्घाटन

- 925 MW नोख सौर पार्क, फलोदी, राजस्थान (आरएसडीसीएल)
- 400 MW सौर पावर परियोजना (जेएसडब्ल्यू एनर्जी)
- 300 MW सौर परियोजना (ईडन रिन्यूएबल्स)
- 200 MW सौर परियोजना (सनफ्री एनर्जी)
- 200 MW सौर परियोजना, बडनू, राजस्थान (अवाडा)
- 300 MW सौर परियोजना (एसीएमई सोलर)
- पीएम-कुसुम घटक-सी (फीडर स्तर सोलराइजेशन) के अंतर्गत विकेन्द्रीकृत सौर ऊर्जा संयंत्र – राजस्थान (895 MW), महाराष्ट्र (2458 MW), मध्य प्रदेश (99 MW), कर्नाटक (65 MW)

राजस्थान सरकार की विकास परियोजनाएं

- जल संसाधन, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, सार्वजनिक निर्माण, ऊर्जा, स्थानीय स्वायत्त शासन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, तथा चिकित्सा शिक्षा विभाग से संबंधित 31 कार्यों का शिलान्यास एवं 17 कार्यों का उद्घाटन
- 15,000 युवाओं को नियुक्ति-पत्र वितरण

हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ

- बीकानेर और दिल्ली कैंट के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन
- जोधपुर और दिल्ली कैंट के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन
- उदयपुर सिटी – चंडीगढ एक्सप्रेस ट्रेन

परियोजना के लाभ

लोगों और उद्योगों की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वच्छ परमाणु ऊर्जा का उत्पादन

जीवन को बेहतर बनाने और व्यवसायिक विकास को बढ़ावा देने के लिए निरंतर हरित ऊर्जा की उपलब्धता

कृषि के लिए किफायती, विश्वसनीय और सतत सिंचाई ऊर्जा हुई सुनिश्चित

लोगों, स्थानीय व्यवसायों, पर्यटन और सेवा क्षेत्रों के लिए बेहतर रेल संपर्क

आर्थिक विकास और नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार के लिए राजस्थान राज्य में मज़बूत इंफ्रास्ट्रक्चर

स्थानीय समुदायों के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार का सृजन

गरिमामयी उपस्थिति

श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े
राज्यपाल, राजस्थान

श्री भजन लाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

श्री मनोहर लाल
केंद्रीय आवासन और शहरी कार्य एवं विद्युत मंत्री

श्री प्रल्हाद जोशी
केंद्रीय उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण; तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री

श्री अश्विनी वैष्णव
केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

श्री भूपेन्द्र यादव
केंद्रीय पर्यावरण, जन और जलवायु परिवर्तन मंत्री

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत
केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

डॉ. जितेन्द्र सिंह
केंद्रीय राज्य मंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान (स्वतंत्र प्रभार) और कार्मिक लोक शिकायत एवं पेंशन परमाणु ऊर्जा एवं अंतरिक्ष विभाग

श्री अर्जुन राम मेघवाल
केन्द्रीय, कानून एवं न्याय (स्वतंत्र प्रभार) एवं संसदीय कार्य राज्य मंत्री

श्री भागीरथ चौधरी
केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री

श्रीमती दिया कुमारी
उप मुख्यमंत्री, राजस्थान

डॉ. प्रेमचन्द बैरवा
उप मुख्यमंत्री, राजस्थान

इस कार्यक्रम को लाइव देखें DD NEWS

विचार बिन्दु

जिस प्रकार जल कमल के पत्ते पर नहीं ठहरता है, उसी प्रकार मुक्त आत्मा के कर्म उससे नहीं चिपकते हैं। –छांदोग्य उपनिषद

राजस्थान में शहरीकरण: जल संरक्षण के मूलभूत प्रयास

राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है, परंतु प्राकृतिक जल संसाधनों के मामले में यह सदैव पिछड़ा रहा है। यहां की मरुस्थलीय जलवायु, कम वर्षा, भूजल का लगातार दोहन और जनसंख्या वृद्धि ने जल संकट को और गहरा बना दिया है। हाल के वर्षों में शहरीकरण की तेज़ रफ्तार ने इस समस्या को अभूतपूर्व स्तर पर पहुँचा दिया है। गांवों से शहरों की ओर पलायन, औद्योगिक इकाइयों की स्थापना, बढ़ती आवासीय कॉलोनियां और जीवनशैली में बदलाव ने जल संसाधनों पर जबरदस्त दबाव डाला है। इस परिप्रेक्ष्य में राजस्थान के शहरीकरण और जल संकट का संबंध गहराई से समझना आवश्यक है।

राजस्थान के जल संकट की जड़ें इसकी भौगोलिक एवं जलवायु परिस्थितियों में छिपी हैं। यहां औसतन 550 मिमी वर्षा होती है, जो देश के अन्य हिस्सों की तुलना में बहुत कम है। पश्चिमी राजस्थान में तो यह और भी कम होकर 200 मिमी के आसपास रह जाती है। थार मरुस्थल का विशाल क्षेत्रफल और रेत के टीलों के बीच बसी बस्तियां वर्षा के अभाव में हमेशा से ही पानी के लिए संघर्ष करती रही हैं। ऐसे में जब शहरीकरण तेज़ी से बढ़ा, तो जल संकट और भी जटिल हो गया।

शहरीकरण का प्रभाव सबसे पहले शहरों की पेयजल आपूर्ति पर दिखाई देता है। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा और उदयपुर जैसे शहरों की आबादी पिछले दो दशकों में कई गुना बढ़ गई है। जोधपुर और बीकानेर जैसे शुष्क शहरों में पेयजल आपूर्ति के लिए नहरों और टैंकरों पर निर्भरता बढ़ गई है। इंदिरा गांधी नहर से पानी की आपूर्ति तो होती है, परंतु उसका वितरण सीमित है और हर साल गर्मियों में हालात बिगड़ जाते हैं। कई बार तो स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि शहरों में जल वितरण को लेकर विवाद और संघर्ष तक देखने को मिलते हैं।

इसके अलावा शहरीकरण ने भूजल दोहन को भी अत्यधिक बढ़ा दिया है। नई कॉलोनियों, मल्टीस्टोरी इमारतों और औद्योगिक इकाइयों को चलाने के लिए भूजल का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है। परिणामस्वरूप राजस्थान के अनेक शहरों में भूजल का स्तर 500 फीट से भी नीचे चला गया है। जयपुर और अलवर जैसे क्षेत्रों में स्थिति बेहद गंभीर है। भूजल स्तर में लगातार गिरावट ने न केवल पेयजल संकट को गहराया है, बल्कि कृषि और पर्यावरणीय संतुलन को भी खतरे में डाल दिया है।

औद्योगिकीकरण भी जल संकट को बढ़ाने वाला एक बड़ा कारक है। शहरीकरण के साथ ही राजस्थान के अनेक शहरों में सीमेंट, वस्त्र, रसायन और खनन आधारित उद्योग स्थापित हुए हैं। इन उद्योगों को बड़े पैमाने पर पानी की आवश्यकता होती है। कई बार उद्योग बिना अनुमति के भूमिगत जल का दोहन करते हैं, जिससे आम जनता के लिए पानी की उपलब्धता प्रभावित होती है। इसके साथ ही औद्योगिक अपशिष्ट जल का प्रदूषण जल स्त्रोतों को भी असुरक्षित बना देता है।

जल संकट केवल एक पर्यावरणीय या आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक स्थिरता से भी जुड़ा हुआ है। जब शहरों में पानी की कमी होती है, तो गरीब और मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। टैंकरों और बोतलबंद पानी पर निर्भरता बढ़ने से आर्थिक असमानता भी गहराती है। ऐसे में सरकार और समाज दोनों को मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना होगा।

शहरीकरण ने जल संकट को केवल मात्रा के स्तर पर ही नहीं, बल्कि गुणवत्ता के स्तर पर भी बढ़ाया है। बढ़ती आबादी और औद्योगिक गतिविधियों ने नालों और जलाशयों को प्रदूषित कर दिया है। अजमेर और उदयपुर जैसे शहरों में झीलें गंदगी और सीवेज की वजह से अपनी स्वच्छता खो चुकी हैं। यही स्थिति जयपुर में मानसागर झील की भी रही है, जिसे समय–समय पर पुनर्जीवित करने के प्रयास किए जाते हैं। प्रदूषित जल न केवल मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि पर्यटन और पर्यावरण को भी क्षति पहुँचाता है।

जल संकट से निपटने के लिए राजस्थान सरकार ने अनेक योजनाएं शुरू की हैं। इंदिरा गांधी नहर परियोजना ने पश्चिमी राजस्थान के कई जिलों की प्यास बुझाई है। इसी प्रकार पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) को भी महत्वाकांक्षी योजना माना जा रहा है। इसके अलावा जल जीवन मिशन के तहत हर घर नल से जल की योजना को लागू किया जा रहा है। वर्षा जल संचयन, तालाबों और बावड़ियों का पुनरुद्धार तथा वाटर हार्वेस्टिंग को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। परंतु बढ़ते शहरीकरण की गति इतनी तीव्र है कि ये प्रयास अक्सर अपर्याप्त साबित होते हैं।

वास्तविक समाधान समाज की भागीदारी में निहित है। यदि शहरी क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन को अनिवार्य कर दिया जाए, तो बहुत हद तक भूजल पर दबाव कम किया जा सकता है। इसी तरह जल पुनर्चक्रण और अपशिष्ट जल के शोधन को अपनाना समय की मांग है। उद्योगों को भी जल संरक्षण की जिम्मेदारी उठानी होगी और उन्हें अपशिष्ट जल प्रबंधन की तकनीकें अपनानी होंगी। आम नागरिकों को भी जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा, तभी इस संकट पर नियंत्रण पाया जा सकेगा।

राजस्थान का इतिहास हमें बताता है कि यहां के पूर्वजों ने जल संरक्षण के अनूठे पारंपरिक तरीके अपनाए थे। स्टेपवेल्स (बावड़ियां), जोहड़, तालाब और टांके इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये संरचनाएं न केवल वर्षा जल का संचयन करती थीं, बल्कि भूजल पुनर्भरण में भी सहायक होती थीं। आज जरूरत है कि इन पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक शहरी नियोजन से जोड़ा जाए। यदि हर नई कॉलोनी, अपार्टमेंट और औद्योगिक क्षेत्र में ऐसे जल संरचनाओं को अनिवार्य किया जाए, तो राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेश में भी जल संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

जल संकट केवल एक पर्यावरणीय या आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक स्थिरता से भी जुड़ा हुआ है। जब शहरों में पानी की कमी होती है, तो गरीब और मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। टैंकरों और बोतलबंद पानी पर निर्भरता बढ़ने से आर्थिक असमानता भी गहराती है। ऐसे में सरकार और समाज दोनों को मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना होगा।

अंततः कहा जा सकता है कि राजस्थान में शहरीकरण और जल संकट का संबंध सीधा और गहरा है। जिस तेजी से शहरीकरण हो रहा है, उसी तेजी से जल संसाधनों का क्षरण हो रहा है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में राजस्थान के शहरों को भयंकर जल आपदा का सामना करना पड़ सकता है। इस संकट से निपटने के लिए वैज्ञानिक तकनीकों, सरकारी योजनाओं और समाज की जागरूकता को एक साथ मिलाना होगा। तभी राजस्थान अपने शहरीकरण की राह पर आगे बढ़ते हुए जल संकट से उबर पाएगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकेगा।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

राशिफल गुरूवार 25 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, स्वाती नक्षत्र सायं 7:09 तक, वैधृति योग रात्रि 9:53 तक, गर करण प्रातः 7:06 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कन्या, चन्द्रमा–तुला, मंगल–तुला, बुध–कन्या, गुरू–मिथुन, शुक्र–सिंह, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज रवियोग सायं 7:09 तक है। आज भद्रा रात्रि 8:14 से आरम्भ होगी। आज विनायक चतुर्थी, भाना चतुर्थी, वैधृति पुण्य है। आज तृतीया तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:50 तक, चर 10:44 से 12:19 तक, लाभ–अमृत 12:19 से 3:18 तक, शुभ 4:47 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:17

मेष

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृष

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मन का भय दूर होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आज घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

धनु

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी और कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एकात्म मानववाद, अंत्योदय और स्वदेशी विचारों के आदर्श प्रतीक

''अंत्योदय दिवस'' 25 सितम्बर पर विशेष.........

वासुदेव देवनानी

भारत के राजनीतिक और वैचारिक इतिहास में जिन महान विभूतियों ने अपने जीवन, चिंतन और कर्म से समाज को नई दिशा दी, उनमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे भारतीय राजनीति और चिंतन के शाश्वत मार्गदर्शक थे। उनका जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तरप्रदेश के मथुरा जनपद के नगला चंद्रभान (वर्तमान में पंडित दीनदयाल धाम) नामक छोटे से गाँव में हुआ। पंडित दीनदयालजी के पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय रेलवे में स्टेशन मास्टर थे और माता रामप्यारी धार्मिक प्रवृत्ति की घरेलू महिला थीं। माता–पिता के निधन के बाद उनका पालन–पोषण नाना–नानी और बाद में चाचा–चाची ने किया। कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में, फिर गवर्नमेंट हाईस्कूल, सीकर (राजस्थान) में और आगे की शिक्षा उन्होंने पिलानी (राजस्थान), कानपुर और आगरा विश्वविद्यालय में प्राप्त की। वे अपने छात्र जीवन में मेधावी और गोल्ड मेडलिस्ट रहे, साथ ही नैतिकता, अनुशासन और संगठनात्मक क्षमता में भी सबसे आगे थे। साधारण किसान परिवार में जन्म लेने के बावजूद वे असाधारण व्यक्तित्व और अद्भुत विचारशक्ति के धनी बने। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज और राष्ट्र के पुनर्निर्माण में अर्पित कर दिया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन और विचारधारा में भारतीय संस्कृति और परंपरा गहराई से रची–बसी थी। वे मानते थे कि भारत एक राजनीतिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी आत्मा सनातन धर्म के मूल्यों में निहित है। उनका जीवन हमेशा सादगीपूर्ण और एक तपस्वी जैसा था। उनका जीवन त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति रहा। वे जीवन पर्यन्त अविवाहित रहे और अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित कर दिया। जीवन के इन्हीं आदर्शों से वे एक महान व्यक्तित्व के धनी और प्रेरणादायी पुरुष बने। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े। आरएसएस के प्रचारक के रूप में उनकी संगठन क्षमता को देखकर उन्हें भारतीय जनसंघ की स्थापना (1951) के समय महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ दी गईं। 1951 से 1968 तक उन्होंने पार्टी संगठन को ग्राम स्तर तक खड़ा किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सबसे बड़ा बौद्धिक योगदान एकात्म मानववाद का सिद्धांत है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने देश को अंत्योदय की अवधारणा दी जिसका मुख्य उद्देश्य समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति तक सेवा और विकास को पहुँचाना था। यह केवल एक आर्थिक नारा नहीं था, बल्कि समाज के कमजोर, वंचित और शोषित वर्गों के लिए उनकी सच्ची समर्पित जिम्मेदारी की भावना थी। आज भारत सरकार और राज्य सरकारों की योजनाओं में अंत्योदय शब्द और भावना सीधे–सीधे उनके चिंतन की ही देन है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का 11 फरवरी 1968 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय स्टेशन (अब पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन) पर रहस्यमय परिस्थितियों में निधन हुआ। यह घटना भारतीय राजनीति और विशेषकर जनसंघ के लिए अपूरणीय क्षति थी। मात्र 52 वर्ष की आयु में यह दिव्य पुरुष दुनिया छोड़ गया, लेकिन उनके विचार आज भी जीवित और प्रासंगिक हैं। आज जब भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं तो यह स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का नारा पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय के स्वदेशी दृष्टिकोण से मेल खाता है। उनकी अंत्योदय की नीति आज कारगर हो रही है। उन्होंने हमें यह सिखाया कि राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण का मार्ग है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का राजस्थान से गहरा सम्बन्ध रहा है। उन्होंने राजस्थान के सीमांत, ग्रामीण और पिछड़े वर्गों को विकास की मुख्यधारा में लाने का जो दृष्टिकोण दिया था, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वर्ष 1951 में जब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय को अखिल भारतीय स्तर पर संगठन की जिम्मेदारी मिली। उस समय अन्य प्रदेशों के समान राजस्थान में भी जनसंघ की पकड़ बहुत कमजोर थी।

उन्होंने जयपुर, अजमेर, कोटा, उदयपुर जैसे प्रमुख शहरों में जनसंघ की इकाइयाँ स्थापित करवाईं। ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचने के लिए उन्होंने स्वयंसेवकों को प्रेरित किया। दीनदयालजी ने अपने भाषणों में राजस्थान के संदर्भ में यह कहा था कि यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से दुर्गम है इसलिए प्रदेश के रेगिस्तानी इलाकों, सीमावर्ती क्षेत्रों, वनवासी और पिछड़े अंचलों के विकास के लिए अंत्योदय का विचार ही सबसे उपयुक्त मार्ग है। उनके यह विचार कालान्तर में 1977 में राजस्थान में भैरोंसिंह शेखावत के नेतृत्व में बनी जनता पार्टी की सरकार के समय सर्वप्रथम देश में लागू की गई योजना अंत्योदय में साकार हुए जिसे बाद में केंद्र और राज्यों की अन्य सरकारों ने भी लागू किया। राजस्थान में आदिवासी और पिछड़े इलाकों (उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, बारां, सिरोही आदि पिछड़े जनजाति उपयोजना क्षेत्रों) के लिए अंत्योदय की अवधारणा विशेष रूप से सार्थक रही।

राजस्थान की राजधानी जयपुर के धानक्या गाँव में पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मारक बना है, जहाँ उनके जीवन और विचारों को प्रदर्शित किया गया है। उनके नाम पर न केवल कई योजनाएँ चल रही हैं बल्कि शिक्षा, कौशल और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम से कई परियोजनाएँ क्रियान्वित हो रही हैं। ये सब उनकी अंत्योदय और स्वावलंबन की सोच को आगे बढ़ा रहे हैं। मैने शिक्षा मंत्री रहते हुए राजस्थान सरकार के स्कूली पाठ्यक्रम में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी सहित करीब 200 ऐतिहासिक हस्तियों और राज्य के महापुरुषों के जीवन और कृतित्व पर नए अध्याय स्कूल की किताबों में जुड़वाएं थे। इसका उद्देश्य नई पीढ़ी के युवाओं को इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने की सीख देना रहा था। साथ ही मैं अपने सार्वजनिक दृष्टांतों में भी हमेशा पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन को युवा, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं राजनीतिज्ञों के लिए प्रेरणादायक बताता हूँ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके एकात्म मानववाद, अंत्योदय और स्वदेशी के आदर्शों को अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में अपनाएंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वासुदेव देवनानी, अध्यक्ष,
राजस्थान विधानसभा।

पधारो म्हारे देश : पीएम नरेंद्र मोदी आज परमाणु ऊर्जा परियोजना व विकास कार्यों की सौगात देंगे

बाल मुकुन्द ओझा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज राजस्थान के दौरे पर रहेंगे। प्रधानमंत्री अपनी जीवन यात्रा के 75 साल पूरा करने के बाद पहली बार वीरों की धरती राजस्थान आ रहे है। राजस्थान अपनी आन, बान, शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। मोदी की यह यात्रा कई मायनों में ऐतिहासिक है। प्रधानमंत्री गुरुवार, 25 सितम्बर को भाजपा के वैचारिक मार्गदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती के अवसर पर केन्द्र व राज्य सरकार की लगभग 1 लाख 8 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं की बांसवाड़ा से सौगात देंगे। इस अवसर पर 15 हजार युवाओं को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्र वितरित करने के साथ जोधपुर, बीकानेर एवं उदयपुर से नई रेल गाड़ियों की शुरुआत भी करेंगे। कार्यक्रम स्थल बांसवाड़ा के नापला, छोटी सरवन में रखा गया है जहां मोदी एक लक्खी सभा को भी सम्बोधित करेंगे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मोदी आजकल देश के विभिन्न राज्यों का सघन दौरा कर रहे है। इसी क्रम में उनका बांसवाड़ा दौरा, राजस्थान के ऊर्जा, जल संसाधन, परिवहन और रोजगार जैसे अहम क्षेत्रों में नई दिशा देने वाला साबित होगा। इसे राज्य की आधारभूत संरचना को मजबूत करने और सर्वांगीण विकास को गति देने के लिए एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है।

राजस्थान राज्य के सूदूर दक्षिण में स्थित आदिवासी बहुल बांसवाड़ा जिला वागड़ या वागवर के नाम से जाना जाने वाला क्षेत्र है। यहाँ के जंगलों में बांस के वृक्षों की प्रचुरता के कारण भी इस भूभाग को बांसवाड़ा के नाम से जाना जाता है। आरावली पर्वत श्रृंखलाओं में बसा बांसवाड़ा अपनी प्राचीनता, सांस्कृतिक धरोहर और विविधता के लिए प्रसिद्ध है। आदिवासी समुदाय को प्रकृति का सबसे करीबी माना जाता है। इस समुदाय ने संसाधनों के आभाव में भी अपनी एक खास पहचान बनाई है। इस क्षेत्र की आदिवासी संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है। यह जनजाति लोगों का एक ऐसा समूह है, जिनकी भाषा, संस्कृति, जीवनशैली और सामाजिक–आर्थिक स्थिति भिन्न है। मगर देशभक्ति और राष्ट्र निर्माण की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी है। मोदी आदिवासियों की इसी धरा पर विकास परियोजनाओं की सौगात देंगे।

प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल, मोदी की यात्रा को ऐतिहासिक बनाने के प्रयासों में जी जान से जुटे है। ये मोदी ही है जो पहली बार के विधायक भजन लाल को राजस्थान की बागडोर सौंप कर मोदी है तो मुमकिन है को सफलीभूत बनाया। मुख्यमंत्री ने प्रधान मंत्री की बांसवाड़ा यात्रा की तैयारियों का जायजा लेते हुए साफ कहा ये हमारी ही पार्टी है जिसका कार्यकर्त्ता बूथ अध्यक्ष से मुख्यमंत्री के पद तक पहुँच सकता है और ये मोदी जी के कारण ही संभव हुआ है।

उन्होंने सभा स्थल का अवलोकन करते हुए आम जनों को कोई भी परेशानी नहीं हो इसका ध्यान रखने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री, मोदी की मंशा और भावना के अनुरूप आम नागरिक के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए समर्पित भाव से प्रयास कर रहे हैं। भजन लाल जनसेवा की अपनी सोच को आगे बढ़ाते हुए प्रदेश के आर्थिक विकास और आधारभूत ढांचे को जन आंकाक्षाओं के अनुरूप मजबूत बनाने में जुटे हैं। मिली जानकारी के मुताबिक मुख्यमंत्री भजनलाल, प्रधानमंत्री मोदी को अपने शासन के विकास कार्यों का रिपोर्ट कार्ड भी प्रस्तुत करेंगे। रिपोर्ट कार्ड में गांव, गरीब और किसान की विभिन्न समस्याओं के समाधान सहित जन कल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी होंगी। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ का कहना है, बांसवाड़ा में देश का सबसे बड़ा आणविक शक्ति केंद्र बनने जा रहा है। कार्यक्रम में सीएम भजनलाल शर्मा के साथ मध्यप्रदेश के सीएम मोहन यादव और उनकी कैबिनेट के कई मंत्री भी शामिल होंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 1 लाख 8 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं की वागड़ - मालवा - गुजराती संस्कृति के संगम स्थल बांसवाड़ा की पावन धरती से सौगात देने के साथ 2,800 मेगावॉट के माही–बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा परियोजना का शिलान्यास करेंगे, जो प्रदेश की ऊर्जा क्षमता को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में मील का पत्थर साबित होगा। भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम के इस प्रोजेक्ट में 700–700 मेगावाट की चार इकाइयां शामिल होंगी।

इसे बांसवाड़ा जिले की छोटी सरवन तहसील के आड़ीभीत, बारी, कटुम्बी, सजवानिया और रेल गांवों में स्थापित किया जाएगा। पहली यूनिट 2031 तक चालू होगी, पूरी परियोजना 2036 तक पूरी होगी। इससे 5900 मेगावाट बिजली उत्पादन और 5000 से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा। सभी यूनिट शुरू होने के बाद राजस्थान में न्यूक्लियर बिजली उत्पादन 5900 मेगावाट हो सकेगा। भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड की ओर से बांसवाड़ा में यह प्रोजेक्ट लगाया जा रहा है। राजस्थान में न्यूक्लियर पावर का पहला संयंत्र रावतभाटा में लगा हुआ है। अब बांसवाड़ा में दूसरा संयंत्र लगेगा।

इस अवसर पर मोदी राजस्थान सहित कई राज्यों की स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाएं भी देशवासियों को समर्पित करेंगे। ये परियोजनाएं राजस्थान–मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक राज्यों की हैं। प्रधानमंत्री बीकानेर–दिल्ली कैन्टवन्दे भारत एक्सप्रेस, जोधपुर–दिल्ली कैन्टवन्दे भारत एक्सप्रेस एवं उदयपुर सिटी–चण्डीगढ़ एक्सप्रेस का हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ करेंगे। प्रधानमंत्री बांसवाड़ा दौरे में जल संसाधन क्षेत्र को भी नई सौगात देंगे। वे 12 जिलों में 15 पेयजल परियोजनाओं की नींव रखेंगे, जिनकी कुल लागत 5,884 करोड़ रूपये है। इन योजनाओं से लाखों लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध होगा। इसके साथ ही, ईसरदा बांध और धौलपुर लिफ्ट व सिंचाई परियोजनाओं का लोकार्पण भी किया जाएगा।

इन योजनाओं से किसानों को पानी की समस्या से राहत मिलेगी और कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी। जल संसाधन विभाग की 20,833 करोड़ रूपये की परियोजनाओं का लोकार्पण भी करेंगे। मोदी कुसुम योजना के लाभार्थियों से भी रूबरू होंगे। प्रधानमंत्री के मुख्य कार्यक्रम के लाइव प्रसारण से सभी जिला मुख्यालयों, नगर निकायों एवं ग्राम पंचायतों को जोड़ा गया है ताकि आम जनता कार्यक्रम के दिग्दर्शन के साथ अपने प्रिय प्रधान मंत्री के भाषण को सुन सके। सभा स्थल पर आमजन के लिए पेयजल, शौचालय, चिकित्सा सुविधा, विद्युत आपूर्ति, सुरक्षा एवं पार्किंग की समुचित व्यवस्था की गई है।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

लोगों के बरसों से अटके काम शहरी सेवा शिविर–2025 में पूरे हो रहे हैं

अलवर, धौलपुर से लेकर सलूम्बर, राजसमंद तक, शहरी हो या ग्रामीण, हर कोई शिविर से खुश होकर लौट रहा है। बरसों से अटके काम शहरी सेवा शिविर–2025 के माध्यम से साकार हो रहे हैं।

नुसरत बानू के आवास का सपना पूरा हुआ :–सलूम्बर शहर निवासी नुसरत बानू अपने परिवार के साथ कच्चे मकान में रहती थी। बरसात के दिनों में छत से पानी टपकता था, जिससे पूरे परिवार को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पक्का मकान बनवाना उनके लिए मुमकिन नहीं था। कुछ दिनों पहले नगर परिषद के कार्मिकों ने सर्वे के दौरान नुसरत बानू को शहरी सेवा शिविर–2025 की जानकारी दी और बताया कि आपका परिवार प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) का पात्र है। उससे इस योजना में आवेदन करवाया गया तथा शिविर में स्वीकृति प्रमाण पत्र सौंपा गया। उसे विभिन्न किश्तों में 1.5 लाख रुपये का अनुदान मिलेगा। नुसरत ने अपने सपनों का मकान बनवाना शुरू कर दिया है।

अब नसरत बानू अपने परिवार के साथ अधिक सुरक्षित और सम्मान जनक जीवन व्यतीत कर पाएगी। उसने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में सुना था कि वे देश के प्रत्येक गरीब परिवार को सरकार की ओर से मकान बनाकर देते हैं। प्रधानमंत्रीजी ने उन्हें पहले से ही उज्ज्वला योजना में गैस कनेक्शन, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना में निःशुल्क राशन दे रहे हैं। राजस्थान के संवेदनशील मुख्यमंत्रा भजनलाल शर्मा भी उन्हें 450 रूपए में गैस सिलेंडर दे रहे हैं, जिससे हम जैसे लोगों का जीवन बड़ा आसान हो गया है। नुसरत बानू को मिली यह वित्तीय सहायता प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 2.0 की प्रभावशीलता और सरकार की संवेदनशीलता का सशक्त प्रमाण है।

शहरी सेवा शिविर बना सहारा, विमला को मिली पेंशन की राहत :–अलवर जिले में स्थित बहादुरपुर निवासी विमला ने वर्ष 2018 में सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लिए आवेदन करवाया था परंतु उसके बाद उसका लंबे समय तक वार्षिक सत्यापन नहीं हो पाने के कारण पेंशन नहीं मिल पा रही थी और परिवार के दैनिक खर्च पूरे करने में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। आर्थिक परेशानियों से जूझ रही विमला की समस्या का समाधान तब हुआ, जब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की दूरदर्शी पहल पर शहरी सेवा शिविर अभियान–2025 चलाया गया। बहादुरपुर नगर पालिका द्वारा लगाए गए शिविर में विमला ने अपनी समस्या दर्ज करवाई। अधिकारियों ने तत्परता दिखाते हुए तुरंत उनकी पेंशन से जुड़ी समस्या का समाधान किया। इस समाधान से विमला को न केवल आर्थिक राहत मिली बल्कि उसे रोज सरकारी कार्यालयों, बैंकों में चक्कर काटने से भी मुक्ति मिली।

मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना बनी आमिर के लिए सहारा :–धौलपुर जिले की नगर पालिका बाड़ी में शहरी सेवा शिविर में एक साधारण ठेले वाले की जिंदगी बदल गई। लोहार बाजार निवासी मोहम्मद आमिर लंबे समय से अपने ठेले पर रोज़मर्रा का सामान बेचकर परिवार का भरण–पोषण कर रहा था। कम आय और बढ़ते खर्चों के बीच उनका व्यापार ठहराव पर था। शहरी सेवा शिविर पहुँचने पर वहां मौजूद अधिकारियों ने उन्हें विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी और मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना के तहत आवेदन करने के लिए प्रेरित किया। योजना की प्रक्रिया पूरी होते ही उन्हें ब्याजमुक्त ऋण सुविधा मिल गई। शिविर में मिली सहायता से आमिर ने ठेले पर ज्यादा किस्म के सामान रखना शुरू किया। अब उनके पास ग्राहकों की पसंद का अच्छा–खासा स्टॉक रहता है। बिक्री में इजाफा हुआ और आमदनी भी बढ़ गई। खुशी का इजहार करते हुए आमिर बोले कि राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना ने मेरे लिए नई राह खोल दी। अब कारोबार बढ़ने के साथ ही परिवार की ज़रूरतें पूरी हो रही हैं और बच्चों की पढ़ाई भी अच्छे से करवा पा रहा हूँ।

विरासत का नामांतरण खुला तो शांति देवी की खुशी का नहीं रहा ठिकाना :–राजसमंद स्थित कुम्भलगढ़ के ग्राम पंचायत धानीन की निवासी शांति देवी के जीवन में वर्ष 2017 एक अंधकारमय मोड़ लेकर आया, जब उनके पति बाबूलाल का निधन हो गया। पति की मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारियाँ उनके कंधों पर आ गई परंतु राजस्व रेकार्ड की एक त्रुटि ने उन्हें वर्षों तक बड़ी कठिनाइयों में डाल दिया। राजस्व अभिलेखों में बाबूलाल की जगह बालूलाद दर्ज था, जिसके कारण विरासत का नामांतरण खुल नहीं पा रहा था। इस त्रुटि के चलते शांति देवी राज्य और केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं में लाभों से वंचित रही। 8 वर्षों तक भटकने के बाद भी समाधान न मिलने से वे टूट–सी गई थी और अपने आप को असहाय महसूस कर रही थीं लेकिन राज्य सरकार की ओर से चलाए जा रहे ग्रामीण सेवा शिविर ने उनके जीवन में आशा की नई किरण जगाई। 18 सितम्बर को ग्राम पंचायत धानीन में आयोजित शिविर के दौरान उन्होंने अपनी उपखंड अधिकारी को बताई। संवेदनशीलता और तत्परता का परिचय देते हुए उपखंड अधिकारी ने उसी समय राजस्व विभाग को शुद्धि के आदेश पारित किए। आदेश मिलते ही तहसीलदार ने मौके पर ही विरासत का नामांतरण दर्ज करवाया और उसकी प्रमाणित प्रतिलिपि शांति देवी को सौंपी। प्रतिलिपि पाकर शांति देवी की आंखों से वर्षों के दुख और संघर्ष से उपजे आंसू छलक पड़े, लेकिन इस बार ये आंसू राहत और खुशी के थे। उन्होंने भावुक स्वर में कहा आज मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे पति की आत्मा को भी शांति मिली होगी। आठ साल की पीड़ा आज खत्म हो गई है। अब मुझे लगता है कि सरकार सचमुच हमारे लिए है।

सहायक निदेशक राजकुमार मीणा, पीआरओ प्रवेश परदेशी, एपीआरओ कुणाल वशिष्ठ, सविता सिंह और ईशा सैनी

अवैध खनन के दौड़ते डम्पर ने एक ही परिवार के चार लोगों की जान ली

हादसे के तुरंत बाद ग्रामीण उग्र हो गए और रोड जाम कर दिया

अलवर, (निसं)। अलवर के प्रतापगढ़ थाना क्षेत्र के झिरी गांव में अवैध खनन कि दौड़ते एक डंपर ने एक परिवार के पांच लोगों को कुचल दिया, जिनमें एक पांच साल का बच्चा भी शामिल है। हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। हादसे के तुरंत बाद ग्रामीण उग्र हो गए और रोड जाम कर दिया, जिससे वहां अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

ग्रामीणों ने प्रशासन पर आरोप लगाते हुए कहा कि लगातार पुलिस को इन अवैध खनन के डंपर को बंद करने की मांग की गई थी, लेकिन मोटी मंथली के चलते पुलिस ने इन पर कार्यवाही नहीं की, आज इसी का नतीजा है कि चार लोगों की मौत हो गई। फिलहाल मौके पर हालात तनावपूर्ण हैं। बड़ी संख्या में पुलिस बल को तैनात किया गया है।

ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं जाम के बीच से जबरदस्ती निकलने वाले लोगों से प्रदर्शनकारियों की कहासुनी भी हो गई। इस दौरान भीड़ ने एक राहगीर को जमकर पीट दिया। घटना सुबह करीब 9:30 बजे की है। डंपर प्रतापगढ़ से झिरी की तरफ जा रहा था। बाइक सवार झिरी की ओर से प्रतापगढ़ की ओर आ रहे थे। बाइक सवार चारों लोग थानागाजी के में जोड़ गांव के रहने वाले थे। इनके साथ एक बच्चा भी था। यह गांव घटनास्थल से 20 किलोमीटर दूर है। एक ही बाइक पर चारों जा रहे थे। मृतकों में बाबूलाल (40), मोनू (5), अशोक (22) और नरसी (25) शामिल हैं। बाबूलाल, मोनू और अशोक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि नरसी ने जयपुर ले जाते समय दम तोड़ दिया। बाबूलाल, मोनू के ताऊ थे। ये लोग मोनू को उसके बड़े भाई से मिलवाने जा रहे थे। मोनू का बड़ा भाई जयपुर के जमवारामगढ़ के निकट दंताला स्कूल के हॉस्टल में रहता है। शवों को प्रतापगढ़ सीएचसी में रखवाया गया है।

जाम लगा रहे लोगों ने राहगीर से मारपीट कर दी।

- ग्रामीणों का आरोप है कि प्रशासन अवैध रूप से खनन माफियाओं के डंपरों को नहीं रोक पाया
- बाइक सवार चारों लोग थानागाजी के में जोड़ गांव के रहने वाले थे

प्रतापगढ़ (अलवर) कस्बे के थानागाजी इलाके में अलवर-जयपुर रोड जाम के दौरान एक राहगीर जबरदस्ती निकलने का प्रयास कर रहा था। इस दौरान भीड़ से उसका विवाद हो गया। अवैध रूप से चल रहे ओवरलोड डंपरों को बंद करने की मांग को लेकर ग्रामीण सड़क जाम किए हुए हैं। आरोप है कि अब तक कई लोगों की जान जा चुकी है। ये डंपर रात को भी तेज रफ्तार में निकलते हैं।

महिला ने आत्महत्या की

पाटन, (निसं)। डाबला रेलवे स्टेशन से लगभग 15 किलोमीटर दूर स्थित जिलो रेलवे स्टेशन के पास एक महिला ने ट्रेन से कट कर जान दे दी। डाबला पुलिस द्वारा मौके पर पहुंचकर महिला के शव को कब्जे में लिया। महिला के बारे में कोई खास सबूत नहीं मिलने के कारण उसकी पहचान नहीं हो पाई है।

लोको पायलट मुकेश कुमार मीणा के अनुसार दोपहर के लगभग 11:50 बजे एक महिला स्टेशन से कुछ दूरी पर रेवाड़ी जा रही मालगाड़ी के सामने अचानक से आ गई, लोको पायलट ने बार-बार हॉर्न बजाया एवं इमरजेंसी ब्रेक भी लगाए। इसके पश्चात भी महिला पटरी से नहीं हटी, और अपने दोनों हाथ फैला कर खड़ी रही। ट्रेन की रफ्तार तेज होने के कारण महिला की मौत हो गई। सूचना पर डाबला पुलिस घटनास्थल पहुंची एवं घटनास्थल का जायजा लिया और महिला के शव को कब्जे में लिया। मृतक महिला की लाश को नीमकाथाना के सरकारी अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया है। डाबला थाना प्रभारी राजवीर सिंह ने बताया कि महिला की उम्र 30-35 साल के बीच है। महिला ने बूटेदार कुर्ता एवं सादा सलवार पहन रखी थी, कानों में रेडिमेंट झुमके और दाहिने हाथ की अंगुली में रेडिमेंट अंगूठी पहनी हुई है। गुलाबी रंग की चप्पल उसके पास मिली है। फिलहाल पुलिस महिला की पहचान करने में जुटी हुई है।

डम्पर ने बाइक सवार ठेकेदार और दो मजदूरों को कुचला

बीकानेर, (निसं)। यहां जयपुर-जोधपुर बाइपास पर एक डंपर ने बाइक सवार तीन युवकों को कुचल दिया। डंपर का टायर तीनों के ऊपर से गुजरा, जिससे तीनों की मौके पर ही मौत हो गई और शव क्षत-विक्षत हो गए। हादसा बाइपास पर जयनारायण व्यास कॉलोनी थाना क्षेत्र में विजयवर्गीय ढाणी के पास मंगलवार रात करीब नौ बजे हुआ। मृतकों में एक ठेकेदार और दो मजदूर थे, जिनकी मौके पर ही मौत हो गई।

सीओ सदर विशाल जांगिड़ ने बताया कि मृतकों में दमाराम पुत्र कानाराम मेघवाल है, जो ठेकेदारी का काम करता है। उसके साथ दो मजदूर राजू पुत्र भोजाराम मेघवाल निवासी चाखू फलोदी और महेश पुत्र मोटाराम मेघवाल निवासी चाखू फलोदी है। तीनों फलौदी निवासी है और काम के लिए ठेकेदार दोनों को अपने साथ बीकानेर लाया था।

सीओ ने बताया कि रात करीब नौ बजे डंपर ने बाइक सवार तीनों युवकों को टक्कर मार दी। इसके बाद डंपर तीनों को कुचलते हुए गुजरा, जिससे शव भी क्षत-विक्षत हो गए। राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को पीबीएम अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया है, जबकि बाइक को व्यास कॉलोनी थाने लाया गया है। मृतकों की उम्र 20 से 30 साल के बीच है। बाइक नंबर के आधार पर तीनों की शिनाख्त की गई। तीनों फलोदी से बीकानेर आए हुए थे और काम के सिलसिले में ठेकेदार ही इन्हें लेकर जा रहा था। वहीं पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

- डंपर का टायर तीनों के ऊपर से गुजरा, जिससे तीनों की मौके पर ही मौत हो गई और शव क्षत-विक्षत हो गए
- तीनों फलौदी निवासी है और काम के लिए ठेकेदार दोनों को अपने साथ बीकानेर लाया था

भरतपुर विकास प्राधिकरण, भरतपुर

क्रमांक :- लेखा/भ.वि.प्रा./2025-26/राजकाज 17892831 दिनांक :- 20/09/2025

ऑनलाईन निविदा सूचना सं. 16/2025-26

भरतपुर विकास प्राधिकरण, भरतपुर में सक्षम पंजीकृत अनुभवी फर्म से खुली निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिये निविदादाता (http://eproc.rajasthan.gov.in, https:/sppp.raj.nic.in) पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। UBN No. WAQ2526SLOB00207

राज.संवाद/सी/25/10738 सचिव, भरतपुर विकास प्राधिकरण, भरतपुर

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD DIV. SHAHABAD

File No. 942 Date:-12-09-2025

Notice Inviting Bid

Bid for "विधानसभा क्षेत्र किशनगंज में नॉन पेचेबल/मिसिंग लिंक सडकों का निर्माण कार्य" NIT No. 18/2025-26 are invited from interested bidders up to 6.00 PM on 01.10.2025 Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 447.86 lacs.

UBN No.- 1. PWD2526WSOR12231, 2. PWD2526WSOB12232 3. PWD2526 WSOB 12233, 4. PWD2526 WSOB 12234, 5. PWD2526 WSOB 12235

(Basant Kumar Gupta) Executive Engineer PWD Division Shahabad

DIPR/C/13779/2025

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, बीकानेर

स्वास्थ्य भवन, त्यागी वाटिका, जेल वैल, बीकानेर

फोन 0151-2201142, email-eemhbikaner@ymail.com

क्रमांक-EE/M&H/BKN/2025-26/1871 दिनांक-12/9/25

ई- टेण्डरिंग निविदा सूचना संख्याः- 38/2025-26

निम्नहस्ताक्षरकर्ता द्वारा राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जिला बीकानेर श्रीगंगानगर में कूल रू. 226.60 लाख के 07 कार्य हेतु निविदा में बताये अनुसार श्रेणी के संवेदको के समकक्ष उपर्युक्त सिविल श्रेणी मे सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग /रेल्वे /एमईएस इत्यादि मे पंजीकृत संवेदको जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त सिविल श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेबसाईट www.dipronline.org http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN No.- 1. NRH2526WSOB01090, 2. NRH2526WSOB01091, 3. NRH2526WSOB01092 4. NRH2526WSOB01093, 5. NRH2526WSOB01094, 6. NRH2526WSOB01095, 7. NRH2526WSOB01096

(शिम्भू राम जाटव) अधिशाषी अभियन्ता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग बीकानेर

DIPR/C/13790/2025

सायबर ठगी मामले में आरोपी गिरफ्तार

आर्मी ऑफिसर की पत्नी से एक लाख रुपए की ठगी हुई थी

श्रीगंगानगर, (निसं)। साइबर ठगी के करीब डेढ़ साल पुराने मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। आरोपी की पहचान मुरादलीन अली (22) निवासी दक्षिण दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल के तौर पर हुई है।

जानकारी के अनुसार आरोपी बैंक के फर्जी नंबर को ऑनलाइन दिखाकर ठगी करने वाले गिरोह से जुड़ा है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 16 मई 2023 को श्रीगंगानगर में नियुक्त एक आर्मी ऑफिसर की पत्नी ने साइबर ठगों द्वारा खाते में से 99,999 रुपए निकालने का मुकदमा दर्ज करवाया था। परिवादिया की ओर से बताया गया कि वो अपने खाते से जुड़ी किसी समस्या के समाधान के लिए इंटरनेट के माध्यम से बैंक का हेल्पलाइन नंबर ढूंढ रही थी। सर्च इंजन की ओर से दर्शाए गए एक मोबाइल नंबर पर संपर्क किया तो पांच रुपए जमा करवाने के लिए कहा गया। इसके बाद खाते से करीब एक लाख रुपए निकल गए।

पुलिस ने संबंधित धाराओं में केस दर्ज किया था। मामले की जांच सीओ रमेश माचरा को दी गई। जानकारी के अनुसार करीब एक लाख रुपए की ठगी के इस मामले में पहली गिरफ्तारी हुई है। पुलिस सूत्रों के अनुसार आरोपी मुरादलीन अली के खाते में ही साइबर फ्रॉड की रकम ट्रांसफर हुई थी। गिरोह के अन्य सदस्यों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

गैंगरेप के मामले में सहयोगी पड़ोसन को बीस साल की सजा सुनाई

कोर्ट ने कहा कि ऐसे मामले में नरमी बरती गई तो पड़ोसियों पर भी विश्वास नहीं कर पाएंगे

अलवर, (निसं)। अलवर के पॉक्सो कोर्ट नंबर-4 ने एक गैंगरेप मामले में एक महिला को 20 साल की सजा सुनाई है। जज हिंमाकनी गौड़ ने 20 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। कोर्ट ने कहा कि अगर ऐसे मामलों में नरमी बरती गई तो समाज में गलत संदेश जाएगा और लोग अपने पड़ोसियों पर भी भरोसा नहीं कर पाएंगे।

जानकारी के अनुसार मामला 25 मई 2024 की रात का है। गांव के एक युवक ने नाबालिग लड़की को धमकी देकर घर की छत पर बुलाया था। वहां पहले से ही उसका एक साथी और पड़ोसन महिला मौजूद थे। महिला ने दोनों युवकों से कहा, 'जो करना है कर लो, मैं देखती हूं।' इसके बाद दोनों युवकों ने नाबालिग लडक़ी के साथ जबरन रेप किया।

- जज ने 20 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया, पड़ोसन ने आरोपियों का सहयोग किया था

विशिष्ट लोक अभियोजक (सरकारी वकील) प्रशांत यादव ने बताया कि मामला बानसूर थाना क्षेत्र का है। युवक नाबालिग लडक़ी को धमकी देकर घर की छत पर बुला लाया। वहां उसका साथी और पड़ोसन महिला पहले से मौजूद थे। दोनों ने लड़की से जबरन गैंगरेप किया था।

मामले की जांच बानसूर के वृत्ताधिकारी सत्यप्रकाश ने की। जांच में पड़ोसन का अपराध साबित होने पर उसके खिलाफ कोर्ट में चार्जशीट पेश की गई। वहीं, 2 अन्य आरोपियों में से एक की मौत हो चुकी है और दूसरा गिरफ्तार होकर अब कोर्ट में पेश है।

कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि महिला पीड़िता के घर की पड़ोसन थी और उसका पीड़िता के घर में अक्सर आना-जाना था। पीड़िता के परिवार ने उस पर भरोसा किया, लेकिन उसने उस भरोसे को तोड़कर घिनौना अपराध किया। कोर्ट ने आगे कहा कि एक महिला होते हुए भी उसने नाबालिग पीड़िता के साथ यौन हिंसा करवाने में सक्रिय रूप से सहयोग दिया, जो कि बेहद निंदनीय है।

कोर्ट ने यह भी कहा कि कानून ने भी ऐसे अपराधों के लिए कड़ी सजा का प्रावधान किया है। सजा देना जरूरी, न्याय का उद्देश्य पूरा हो सके। इसलिए आरोपी को कड़ी सजा देना जरूरी है ताकि न्याय का उद्देश्य पूरा हो सके, समाज में इस तरह के अपराधों को रोका जा सके। कोर्ट ने यह भी साफ़ किया कि ऐसे मामलों में नरमी बरती गई तो समाज में गलत संदेश जाएगा और लोग अपने पड़ोसियों पर भी भरोसा नहीं कर पाएंगे।

राजस्थान धरोहर प्राधिकरण

भू-तल, पर्यटन भवन, संगम मार्ग (विधायकपुरी वाले के सामने), खासा कोठी, जयपुर-302001, Tel:-0141-2615648/40, E-Mail : rhppa.jaipur@gmail.com

ई-निविदा सूचना संख्या 21/2025-26

निम्नलिखित कार्यों के लिए अनुभवी कंसलटेंट फर्मों से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रु.)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	Consultancy Services for- Preparation of Detailed Project Report for development works, beautification and develop public facilities at Meera Bai Mandir, Merta, Nagaur Rajasthan. UBN is: HPP2526SLOB00027	20.00 Lakh	3 Months

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। इच्छुक निविदादाताओं को अपने डिजीटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।

राज.संवाद/सी/25/10781 मुख्य कार्यकारी अधिकारी

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड खानपुर

क्रमांक :- 754 दिनांक : 11.09.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 11/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सड़क /पुलिया/भवन मरम्मत कार्यों के लिये, उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के "एए", एवं "ए", "बी", सी श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा सेसम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाईट "www.diproline.org", "www.eproc.rajasthan.gov.in" तथा "www.pwd.rajasthan.gov.in" पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।

UBN No. (1) PWD2526WSOB12064, (2) PWD2526WSOB12071, (3) PWD2526WSOB12072 (4) PWD2526WSOB12073, (5) PWD2526WSOB12074, (6) PWD2526WSOB12075 (7) PWD2526WSOB12076, (8) PWD2526WSOB12077, (9) PWD2526WSOB12078 (10) PWD2526WSOB12079, (11) PWD2526WSOB12081, (12) PWD2526WSOB12082 (13) PWD2526WSOB12085, (14) PWD2526WSOB12087

अधिशाषी अभियंता सा.नि.वि. खण्ड खानपुर

DIPR/C/13673/2025

रेप के आरोपी को पकड़ने गई पुलिस पर हमला

सीकर, (निसं)। जिले के धोद एक कस्बे में नाबालिग से रेप के मामले में फरार चल रहे आरोपी को पकड़ने आई मौलासर पुलिस के साथ मारपीट की गई। आरोपी के परिवार के लोगों ने पुलिसकर्मियों के साथ मारपीट की। परिवार की महिलाओं ने पुलिसकर्मियों के बाल नोंचे और थप्पड़ भी जड़े। इस पूरी घटना का वीडियो भी सामने आया है। मौलासर पुलिस के कांस्टेबल ने धोद पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया है।

जानकारी के अनुसार डीडवाना-कुचामन के मौलासर एरिया की रहने वाली 16 साल की नाबालिग लड़की को धोद कस्बे की अनोखू रोड का रहने वाला गौतम अपने साथ बहला-फुसलाकर ले गया था। इस संबंध में नाबालिग के परिजनों के मौलासर पुलिस थाने में मामला भी दर्ज करवाया। नाबालिग को दस्तयाब करने के बाद जब उसके बयान हुए तो सामने आया कि आरोपी गौतम ने उसके साथ रेप भी किया। ऐसे में पुलिस ने मुकदमे में पॉक्सो एक्ट सहित अन्य धाराओं को जोड़ते हुए इन्वेस्टिगेशन किया। बीती शाम को 5:30 बजे के करीब मौलासर पुलिस के दो कांस्टेबल मुकेश और विजेंद्र आरोपी गौतम को पकड़ने के लिए उसके घर पहुंचे। दोनों आरोपी को अपने साथ बड़ी मुश्किल से घर के बाहर लेकर आ गए, लेकिन यहां एक बिजली के पोल के पास गौतम के परिवार के लोगों ने दोनों पुलिसकर्मियों को रोक लिया। जिन्होंने कभी पुलिसकर्मियों के बाल नोंचे तो कभी थप्पड़ जड़े। आरोपी गौतम ने भी कई बार भागने की कोशिश की, लेकिन दोनों पुलिसकर्मियों ने उसे पकड़े रखा। इसके बाद स्थानीय धोद पुलिस को इस पूरे मामले के बारे में सूचना दी गई। यहां मौके पर धोद पुलिस पहुंची, जिन्होंने आरोपी गौतम सहित अन्य लोगों को पकड़ लिया। मौलासर पुलिस के दोनों कांस्टेबल मुकेश और विजेंद्र की रिपोर्ट पर राजकार्य में बाधा सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज करके इन्वेस्टिगेशन शुरू कर दिया गया।

मामले में सीओ धोद सुरेश कुमार शर्मा का कहना है कि पोक्सो एक्ट के मामले में फरार चल रहे आरोपी की तलाश में मौलासर पुलिस के दो कांस्टेबल के साथ मारपीट की गई है। राजकार्य में बाधा सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज करके इन्वेस्टिगेशन शुरू कर दिया गया है।

- परिवार की महिलाओं ने पुलिसकर्मियों के बाल नोंचे और थप्पड़ भी जड़े
- घटना का वीडियो सामने आया, मौलासर पुलिस के कांस्टेबल ने धोद पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया

26 कार्टन अवैध शराब बरामद, दो गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। आबकारी निरोधक टीम वृत गोगुन्दा क्षेत्र ने गोगरूद, क्यारी में गश्त व दबिश कार्रवाई करते हुए सेई बांध, बेकरिया, खेराड़िया, घणावल में मय जाप्ता आवासीय मकानों में दबिश देकर अवैध भण्डारण की गई 26 कार्टन मदिरा बरामद की है। मौके से दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर नियमानुसार अभियोग दर्ज किया गया।

जानकारी के अनुसार आबकारी वृत निरीक्षक गोगुन्दा शम्भू सिंह राठौड़ ने मय जाप्ता कार्रवाई करते हुए गोगुन्दा वृत के पडत मदिरा दुकान क्षेत्र गोगरूद, क्यारी में बड़ी पुलिया, सेई बांध, बेकरिया एवं सायरा क्षेत्र के खेराडिया, घणावल में आवासीय मकानों में दबिश देकर तलाशी ली। कार्रवाई में दो स्थानों पर 26 कार्टन अवैध भण्डारण की गई मदिरा, बीयर बरामद की गई। मौके से 2 अभियुक्तों लक्ष्मण गरासिया, मोहन सिंह को गिरफ्तार कर अभियोग दर्ज किया गया। मामले में आगे कार्रवाई जारी है।

जंगल में फंदे पर लटका मिला युवक का शव

चार दिन से लापता था, 10 दिन पहले ही अहमदाबाद से आया था

डूंगरपुर, (निसं)। सदर थाना क्षेत्र के देवल मनात फला में 4 दिन से लापता युवक का शव घर से 3 किलोमीटर दूर गरदूना गांव के जंगल में पेड़ से लटका हुआ मिला है। घटना के बाद सनसनी फैल गई और लोग इकट्ठे हो गए। शव से बदबू आ रही थी।

सदर थाने के एएसआई ने बताया कि देवल मनात फला निवासी लक्ष्मी चंद की ओर से रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है। इसमें बताया कि उसका छोटा भाई संजय पुत्र तेजा मनात अहमदाबाद में कारीगरी का काम करता है। 10 दिन पहले ही वह अहमदाबाद से घर आया था। रविवार के दिन से वह घर से लापता था और उसकी तलाश कर रहे थे, लेकिन उसका कोई पता नहीं लग पा रहा था। बुधवार को लोगों ने बताया कि शिशोद पंचायत के गरदूना के जंगल में एक युवक शव पेड़ से लटका हुआ है, जिस पर परिवार के लोग गरदूना के जंगल पहुंचे, जहां पेड से शर्ट का फंदा लगाकर शव लटका हुआ मिला। शव पूरी तरह से सड़ा-गला होने से बदबू आ रही थी। घटना की सूचना पर सदर थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची। शव को फंदे से नीचे उतारा और डूंगरपुर अस्पताल के मोर्चरी लेकर आए, जहां पुलिस की ओर से पोस्टमॉर्टम की कार्यवाही की गई।

- पेड़ से शर्ट का फंदा लगाकर शव लटका हुआ मिला, सड़ा-गला होने से बदबू आ रही थी

कार्यालय उप वन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक (प्रथम) रणथम्भौर बाघ परियोजना सवाई माधोपुर

क्रमांक : एफ () स्टोर / उवसं/प्रथम / 2025-26/4664 दिनांक: 15-09-2025

अल्पकालीन ई-निविदा सूचना 30/2025-26

कार्यालय उप वन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक (प्रथम) रणथम्भौर बाघ परियोजना, सवाई माधोपुर की ओर से राज्य एवं केन्द्र सरकार के राजकीय / अद्धर्शासकीय / स्वायत्तशासी निकायों में सक्षम श्रेणी में निर्माण कार्यों हेतु पंजीकृत संवेदकों से अभयारण्य क्षेत्र (रणथम्भौर बाघ परियोजना, प्रथम सवाई माधोपुर) रेंज फलौदी, तालडा, बालेर, कुण्डेरा, सवाई माधोपुर एवं खण्डार के अन्तर्गत wire mesh fencing fitted with 2.1 mt. high prestressed cement concrete post कार्य (अनुमानित लागत 123.56 लाख रू.) हेतु वर्ष 2025-26 टेण्डरिंग के माध्यम से ई-निविदायें दिनांक 16.09.2025 प्रातः 10:00 बजे से दिनांक 25.09.2025 को सायं 6:00 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। जिन्हें दिनांक 26.09.2025 को नियमानुसार खोला जावेगा।

बोली की अन्य शर्तें / दस्तावेज राज्य लोक उपापन पोर्टल "http://sppp.rajasthan.gov.in" एवं "http://eproc.rajasthan.gov.in" देखी व डाउनलोड की जा सकती हैं।

NIB No.- FOR2526 A1617 UBN No.- FOR 2526WSOB02107
NIB No. FOR 2526 A1617 UBN No.- FOR 2526 WSOBO 2112
NIB No.- FOR 2526A1617 UBN No.- FOR 2526 WSOBO 2113
NIB No.- FOR 2526A1 817 UBN No.- FOR 2526WSOB02114

उप वन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक (प्रथम) बाघ परियोजना रणथम्भौर सवाई माधोपुर

DIPR/C/13987/2025

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने शहरी सेवा शिविर में लाभार्थियों को पट्टे दिये

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने नगर परिषद में सभापति दिनेश सिंह राठौड़ के साथ सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण कर लाभार्थियों को पट्टे वितरण किये।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि सरकार द्वारा शहरी क्षेत्र के साथ ग्रामीण इलाकों में आमजन को राहत देने के लिये शिविर लगाये हैं, ताकि लोग अपनी जायज व आवश्यक समस्याओं का समाधान करवा सके। शिविर में प्रत्येक लाभार्थियों के त्वरित गति से काम हो रहे हैं, किसी को भी वंचित नहीं किया जा रहा है। उन्होंने शिविर में राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का महिलाओं के साथ बेटियों को विशेष फायदा होने पर शिविर की सार्थकता को लेकर फीडबैक लेकर संतोष जताया। उपमुख्यमंत्री ने जीएसटी बजट उत्सव के तहत पुरानी मिल चौराहे से मुख्य चौराहे तक पैदल चलकर दुकानदारों से रूबरू बात की और कहा कि जीएसटी कम होने से महंगाई से बड़ी राहत मिल रही है, त्यौहारी सीजन में लोग टैक्स कम होने से आसानी से खरीददारी कर सकेंगे। जीएसटी में बदलाव से हर व्यक्ति को लाभ होगा। दुकानदारों ने जीएसटी कम किये जाने पर प्रधानमंत्री मोदी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे व्यापार गति पकड़ेगा।

पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा दिये गये बयान को लेकर कहा कि जीएसटी में बड़े पैमाने पर बदलाव किये जाने के बावजूद विपक्ष खुश नहीं है। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने पहाड़िया स्वीट्स पर जाकर जीएसटी में कमी को लेकर चर्चा की। पहाड़िया परिवार के राकेश पहाड़िया, पूनम पहाड़िया, गणेश पहाड़िया, प्रशांत पहाड़िया, मेघू पहाड़िया व महेंद्र पाटनी ने उप मुख्यमंत्री का परम्परागत रूप से स्वागत किया। इस दौरान कलेक्टर लोकबंधु, आयुक्त सीता वर्मा, उपखण्ड अधिकारी रजत यादव सहित वाणिज्य विभाग अधिकारी, संबंधित विभाग अधिकारी व भाजपा जिलाध्यक्ष रमेश सोनी मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण कर लाभार्थियों को पट्टे वितरण किये।

- उपमुख्यमंत्री ने जीएसटी बजट उत्सव के तहत पैदल चलकर दुकानदारों से बात की
- दुकानदारों ने जीएसटी कम किये जाने पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे व्यापार गति पकड़ेगा

बस की टक्कर से छात्र की मौत

जोधपुर, (कासं)। शहर के जालोरी गेट सर्किल पर मंगलवार की सुबह एक सिटी बस के चालक ने पैदल जा रहे छात्र को चपेट में ले लिया। हादसे में गंभीर रूप से घायल छात्र को अस्पताल ले जाया गया, मगर बाद में उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। छात्र बीए फाइनल कर चुका था और बीएसटीसी की तैयारी कर रहा था। उसके मामा की तरफ से सरदारपुरा थाने में सिटी बस चालक के खिलाफ रिपोर्ट दी है।

सरदारपुरा थाने के हैड कांस्टेबल मनफूल ने बताया कि सालवों की ढाणी मथानिया का रहने वाला 21 वर्षीय महेंद्र जाट बीए फाइनल कर चुका था और बीएसटीसी की तैयारी कर रहा था। मंगलवार की सुबह के समय वह पैदल जालोरी गेट सर्किल के पास से निकल रहा था। वह बुक डिपो के सामने पहुंचा तब जालोरी गेट की तरफ से आई एक सिटी बस के चालक ने उसे चपेट में ले लिया। हादसे में महेंद्र बुरी तरह घायल हो गया, जिस पर उसे अस्पताल ले जाया गया, मगर बाद में उसकी मौत हो गई। सिटीबस का चालक मंडोर निवासी सलीम बताया जाता है। मृतक महेंद्र के मामा श्यामलाल की तरफ से सिटी बस चालक के खिलाफ रिपोर्ट दी गई है।

COLLEGE OF AGRICULTURE

KISHANGARH BAS, KHAIRTHAL-TIJARA 301405, E-mail: dean.coakishangarhbas@sknau.ac.in

No. : F. ( )/Store /COAKGB/2024-25/435 Dated :- 20/09/2025

Open Tender Information

Sealed tenders are invited for "Underground PVC Pipeline and Mini Sprinkler System Installation at Nanglia Farm" for College of Agriculture, Kishangarhbas, Distt. Khairthal-Tijara (Rajasthan). Tender formats can be downloaded from www.sknau.ac.in or are available at our office from day of publishing to 11:00 AM of 27.09.2025. Form fee will be Rs. 500/- which can be paid in the form of DD in favour of the Dean, College of Agriculture, Kishangarhbas. Along with tender documents, the bidder also has to submit bid security money (EMD) of Rs. 10000/- (@ 2% of the bidding amount) in the form of DD favouring the Dean, College of Agriculture, Kishangarhbas up to 01:00 PM on 27.09.2025. The tender will be opened on the same day at 02.00 P.M. before the purchase committee by an officer duly authorised by the Dean, College of Agriculture, Kishangarhbas in the presence of any intending tenderer or their authorised representative who may be present. Detailed information regarding above mentioned tender is available at our office, university website www.sknau.ac.in and https://sppp.rajasthan.gov.in. The undersigned reserves the right to reject the tender without assigning any reason thereof. UBN No. SKN2526GSOB00221

Raj.Samwad/C/25/10746 DEAN

'शिविर में पात्र लाभार्थियों को मिले योजनाओं का लाभ'

■ ग्रामीण और शहरी सेवा शिविर वर्षो पुरानी समस्याओं के समाधान का बने मंच : डॉ बैरवा

राजसमंद, (निसं)। उप मुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा ने जिला कलेक्ट्रेट सभागार में बुधवार को अधिकारियों की बैठक लेकर ग्रामीण सेवा शिविर और शहरी सेवा शिविर की विस्तृत समीक्षा कर नवीनतम प्रगति जानी। इस दौरान जिला प्रमुख रतनी देवी जाट, कुंभलगढ विधायक सुरेंद्र सिंह राठौड, जिला कलक्टर अरुण कुमार हसीजा, जिलाध्यक्ष जगदीश पालीवाल, एडीएम नरेश बुनकर, जिला परिषद सीईओ बृजमोहन बैरवा, समाजसेवी माधव जाट सहित समस्त विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में ग्रामीण सेवा शिविरों के माध्यम से किसानों से जुडे विभिन्न लंबित प्रकरणों का निस्तारण, किसानों की लंबित रजिस्ट्री, किसान गिरदावरी ऐप पर पंजीयन व गिरदावरी के लिए प्रेरित करना, उपखंड एवं सहायक कलेक्टर न्यायालयों में लंबित नोटिसों की तामील, लंबित कुर्रेजात रिपोर्ट तैयार करने, भूमि विभाजन एवं नामांतरण प्रकरणों के निस्तारण सहित भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 136 के तहत शुद्धिकरण प्रकरणों का समाधान करने, गैर खातेदारी से खातेदारी प्रकरणों का निस्तारण कर भूमि अभिलेख में इन्द्राज सुनिश्चित करने आदि की समीक्षा की।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना के अंतर्गत बीपीएल परिवारों का सर्वे, स्वामित्व योजना के तहत पट्टों के आवेदन, स्वीकृति एवं वितरण, स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण में व्यक्तिगत शौचालयों के आवेदन प्राप्त कर स्वीकृति जारी करने, सामुदायिक शौचालयों की स्वीकृति एवं अक्रियाशील शौचालयों को क्रियाशील बनाने, आरआरसी केन्द्रों के लिए भूमि आवंटन व स्वीकृतियों की प्रगति, मुख्यमंत्री विश्वकर्मा पेंशन योजना के लाभार्थियों का सर्वेक्षण आदि को लेकर उप मुख्यमंत्री ने विस्तार से समीक्षा कर दिशा निर्देश दिए।

पशुपालन विभाग द्वारा पशु स्वास्थ्य शिविर, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के तहत पॉलिसियां वितरण, बिजली से जुडी समस्याओं सप्लाई, मीटर, ट्रांसफॉर्मर, तारों व खंभों के निस्तारण तथा बिल, मांगपत्र एवं लोड संबंधित शिकायतों पर भी समीक्षा की गई। कृषि क्षेत्र में बीज मिनी किट का वितरण और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की पॉलिसियों का वितरण, वित्तीय समावेशन के अंतर्गत प्रधानमंत्री जन धन योजना में नए खाते खोलने, निष्क्रिय खातों का सत्यापन, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं अटल पेंशन योजना में नए पंजीयन, जन आधार योजना में नवीन नामांकन, अद्यतन व संशोधन कार्य को लेकर दिशा निर्देश दिए। फ्लैगशिप योजनाओं की समीक्षा के दौरान राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना के लंबित प्रकरणों, आधार सीडिंग व ई-केवाईसी की प्रक्रिया, राशन कार्ड धारकों की एलपीजी आईडी मैपिंग, सामाजिक सुरक्षा पेंशनर्स का सत्यापन, पालनहार योजना के नामांकन व नवीनीकरण, यूडीआईडी कार्ड निस्तारण, आवश्यक कृत्रिम अंग वितरण, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना एवं प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में पंजीयन की स्थिति जानी। शहरी सेवा शिविरों की समीक्षा में बताया गया कि नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग द्वारा जारी अधिसूचना अनुसार आमजन को विभिन्न छूट और रियायतें उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसमें पिछले वर्षो की बकाया लीज राशि एकमुश्त जमा कराने पर ब्याज में 1०० प्रतिशत छूटए फ्री-होल्ड पट्टा एवं लीज मुक्ति हेतु बकाया राशि पर 6० प्रतिशत तक छूट, आवासीय भूखण्डों के पुनर्ग्रहण शुल्क में 75, 5० व 25 प्रतिशत तक छूट शामिल है। कृषि भूमि पर बसी कॉलोनियों में शेष पट्टे जारी करने पर ब्याज में शत-प्रतिशत छूट, अपंजीकृत दस्तावेजों से खरीदे गए भूखण्डों पर अंतिम क्रेता को शास्ती में 1०० प्रतिशत छूट, आवासीय प्रीमियम दरों में 25 व 15 प्रतिशत छूट, भवन मानचित्र स्वीकृति शुल्क में 5० प्रतिशत छूट, खांचा भूमि आवंटन में छूट व सक्षमता, नामांतरण एवं मौका निरीक्षण में सरलीकरण जैसे प्रावधान किए गए हैं।

उप मुख्यमंत्री डॉ बैरवा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिविरों में सुनिश्चित किया जाए कि अधिक से अधिक पात्र लाभार्थियों को योजनाओं का लाभ मिले और लंबित प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण हो। उन्होंने कहा कि ग्रामीण व शहरी सेवा शिविर आमजन को सीधे लाभ पहुंचाने का सशक्त माध्यम हैं और इनके सफल क्रियान्वयन से जिले के समग्र विकास को नई गति मिलेगी। बैठक में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग द्वारा नवीन परिवारों को एनएफएस में लाभान्वित करने हेतु योजना की प्रगति प्रस्तुत की गई। कृषि एवं ऊर्जा क्षेत्र में प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान, कुसुम सोलर प्लांट, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना और विद्युत विभाग की संशोधित वितरण क्षेत्र योजना जैसे अभियानों की समीक्षा की गई।

प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन और मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान की स्थिति पर चर्चा की गई। महिला एवं बाल कल्याण के अंतर्गत लाडो प्रोत्साहन योजना तथा राजीविका के अंतर्गत नमो ड्रोन दीदी, सोलर दीदी, लखपति दीदी, बैंक सखी, कृषि सखी एवं पशु सखी जैसी योजनाओं पर विशेष फोकस किया गया। ग्रामीण एवं शहरी विकास से संबंधित योजनाओं में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण एवं शहरी, मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.०, जल जीवन मिशन, अमृत योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, मुख्यमंत्री स्वनिधी योजना, पंच गौरव योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना, अटल प्रगति पथ, अटल ज्ञान केन्द्र और स्वामित्व योजना की समीक्षा की गई।

आसपुर विधायक ने बांटे लैपटॉप और प्रोजेक्टर

डूंगरपुर, (निसं)। आसपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक उमेश डामोर ने शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए नान्दली सागौरा और रायकी ग्राम पंचायतों के विभिन्न सरकारी विद्यालयों में लैपटॉप और प्रोजेक्टर का वितरण किया। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक से जोडना और उन्हें बेहतर व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है।

दौरे के दौरान विधायक डामोर ने विद्यालयों की शैक्षणिक व्यवस्था और सुविधाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में लैपटॉप और प्रोजेक्टर का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ये उपकरण बच्चों को डिजिटल शिक्षा से जोडेगे और उनकी सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक व प्रभावी बनाएंगे।

विधायक डामोर ने कहा कि मैं सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि हमारे क्षेत्र का प्रत्येक बच्चा आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे। यह उपकरण बच्चों को न केवल पढाई में मदद करेंगे,बल्कि उन्हें समय के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए भी तैयार करेंगे। उन्होंने आगे यह भी आश्वासन दिया कि क्षेत्र में शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य, रोजगार और सडकों जैसी बुनियादी समस्याओं के समाधान पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा। इस अवसर पर भारत आदिवासी पार्टी के कई पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इनमें बीसीसी प्रभारी हीरालाल हारमोर खरोडिया, देवापुरी मंडल अध्यक्ष धनजी भाई बुज तथा कुरजी पारगी,भीमराज, ईश्वर सहित कई गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

सार-समाचार

नहर (फीडर) का शिलान्यास आज

मावली, (निसं)। दशकों से लंबित किसानों और ग्रामीणों की सबसे बडी मांग अब पूरी होने जा रही है। बडियार के मरतडी गांव स्थित बागोलिया बांध को भरने के लिए प्रस्तावित नहर (फीडर) का शिलान्यास आज 25 सितम्बर को दोपहर 1 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्चुअल माध्यम से किया जाएगा। करीब 200 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली यह परियोजना बागोलिया बांध में पानी की स्थायी उपलब्धता सुनिश्चित करेगी। इस ऐतिहासिक अवसर पर क्षेत्र के वरिष्ठ नेता, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद शांतिलाल चपलोत ने कहा की यह वह दिन है जिसका इंतजार पूरे क्षेत्र ने वर्षों तक किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा एवं सांसद श्री सी.पी. जोशी ने जिस दूरदर्शिता से किसानों के हित में कदम उठाया है, वह मेवाड़ के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। चपलोत ने बताया की स्थानीय ग्रामीण और किसान लंबे समय से बागोलिया बांध को भरने के लिए फीडर नहर की मांग करते आ रहे थे। लगभग छह दशकों से लंबित इस मांग को अब हकीकत का रूप मिलने जा रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक वर्ष पूर्व इस घोषणा को साकार करने का वादा किया था, जो अब धरातल पर उतर रहा है।

शहरी सेवा शिविर का किया निरीक्षण

उदयपुर, (कासं)। जिला कलक्टर एवं नगर निगम के प्रशासक नमित मेहता ने गुरुवार को नगर निगम परिसर में आयोजित शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने आमजन की समस्याएं भी सुनी। अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। जिला कलक्टर मेहता गुरूवार अपराह्न बाद नगर निगम परिसर पहुंचे। वहां उन्होंने पं दीनदयाल सभागार के भूतल पर वार्ड संख्या 35, 36, 37, 48 एवं 49 के लिए आयोजित शहरी सेवा शिविर 2025 का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान कलक्टर ने शिविर स्थल पर विभिन्न विभागों तथा नगर निगम की विभिन्न शाखाओं द्वारा लगाई स्टॉल्स का अवलोकन किया तथा आमजन को उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं की जानकारी ली। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान करने तथा शिविर में आने वाले प्रत्येक लाभार्थी को योजनाओं का लाभ सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने कहा कि राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप सेवा शिविरों का उद्देश्य लोगों को योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराना है। ऐसे शिविरों से आमजन को एक ही स्थान पर अनेक विभागों की सेवाएँ मिल रही हैं।, जिससे समय और संसाधन दोनों की बचत होती है। अधिकारी एवं कर्मचारी यह सुनिश्चित करें कि शिविर में आमजन के प्रार्थना पत्र संग्रहित करने के साथ उनका यथासंभव मौके पर ही निस्तारण हो, ताकि लोगों को शिविर का सही मायनों में लाभ मिल सके।

संक्षिप्त

साइबर ठगी का मामला, एक धरा

उदयपुर, (कासं)। साईबर ठगी जरिये अवैध लेनदेन करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भिजवाया। पुलिस मुख्यालय जयपुर के निर्देश पर म्यूल अकाउंट के खिलाफ चलाएं जा रहे अभियान के दौरान जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उपाधीक्षक कैलाशचंद्र एवं छगन पुरोहित के सुपरविजन में एएसआई रज्जाक मोहम्मद द्वारा किए गए अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर प्रतापसिंह पुत्र मंगल सिंह बागेला निवासी सिद्धि विनायक काम्पलेक्स पार्क सेक्टर 14 गोवर्धन विलास के खिलाफ खातों को किराए पर देकर साईबर ठगी जरिये लेने देन करने की पुष्टि होने पर प्रकरण दर्ज किया। आरोपी के तीन खातों में ज्यादा लेने देन करने एवं शिकायते मिलने पर जांच की गई थी। इस पर इस मामले में पुलिस ने आरोपी प्रतापसिंह को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर जेल भिजवाया।

अवैध एमडीएम सहित एक पकड़ा

उदयपुर, (कासं)। अवैध एमडीएम सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया। जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उपाधीक्षक छगन पुरोहित के सुपरविजन में हिरणमगरी थाना अधिकारी भरत योगी के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए मो. अदनान छीपा पुत्र मो. हुसैन छीपा निवासी छीपा मोहल्ला आयड़ को गिरफ्तार कर इसके कब्जे से 02.23 ग्राम एमडीएमए जब्त कर प्रकरण दर्ज किया। जिससे पूछताछ की जा रही है।

आपसी झगड़े में पांच छात्र चोटिल

उदयपुर, (कासं)। जनजाति छात्रावास में आपसी कहासुनी पर छात्रों के बीच झगडा हो गया। जिसके चलते पांच छात्र चोटिल हो गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार मंगलवार अपरान्ह में झाड़ोल कस्बे में स्थित जनजाति छात्रावास में किसी बात को लेकर छात्रों के बीच कहासूनी हो गई। इस दौरान झगड़ा होने पर छात्र गुलाबचंद, निर्मल, विक्रम, ईश्वरलाल तथा मुकेश चोटिल हो गए। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर समझाईश कर मामला शांत किया। मामले में पुलिस ने पीडित हरिशचंद्र पुत्र शंकरलाल निवासी ऋषभदेव हाल वार्डन की रिपोर्ट पर नो छात्रों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया।

हादसे में श्रमिक की मौत

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर में होटल में काम करते समय हुए हादसे में घायल श्रमिक की मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीडित गुडली निवासी दिनेश पुत्र शंकर मीणा की हादसे में मौत हो गई। मंगलवार को दिनेश कालारोही में स्थित होटल पर ट्रेक्टर में मार्बल लेकर आया था। जिसे खाली करते समय वह घायल हो गया। जिसे परिजनों ने उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया। जहां उसकी मौत हो गई। इस पर एएसआई अमीन तावड़ ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

अवैध हथियार सप्लायर गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। सविना थाना पुलिस ने अवैध हथियार सप्लाई करने के मामले के मुख्य आरोपी को गिरफ्तार किया। जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधिक्षक उमेश ओझा, पुलिस उपाधीक्षक छगनपुरोहित के सुपरविजन में अजयसिंह राव के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए 19 जनवरी 25 को प्रकरण संख्या 49/25 आर्म्स एक्ट मामले में महेन्द्र सिंह पुत्र दुल्हेसिंह निवासी सरे कला सुखेर को गिरफ्तार किया था। जिसने पूछताछ में हथियार संपी कुमार पुत्र शेरसिंह निवासी नाटासगुढा गोडजी झुंझुंनू से खरीदना बताया। इस पर आरोपी संदीप को गिरफ्तार इसके खिलाफ दस अपराधिक प्रकरण पूर्व में दर्ज है।

मुख्य सचिव को गार्ड ऑफ ऑनर

उदयपुर, (कासं)। मुख्य सचिव सुधांश पंत बुधवार सांय उदयपुर पहुँचे, जिला कलेक्ट्रेट पहुँचने पर पुलिस के जवानों ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर नमित मेहता,एडीएम सिटी जितेंद्र ओझा, जिला परिषद सीईओ रिया डाबी आदि मौजूद रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ें, नवाचारों को अपनाएं : सांसद डॉ. रावत

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान स्टेट एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल सोसायटी के तत्त्वावधान में बुधवार को छठी राज्य स्तरीय एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल विद्यालयों का सांस्कृतिक, साहित्यिक फेस्ट एवं कला उत्सव का उद्घाटन समारोह शोभागपुरा स्थित महाप्रज्ञ विहार परिसर में आयोजित हुआ। समारोह में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, ईएमआरएस शिक्षण-प्रशिक्षण से जुड़े लोग एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

समारोह में मुख्य अतिथि उदयपुर लोकसभा सांसद डॉ. मन्नालाल रावत ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ें और नवाचारों को अपनाएं। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज प्रकृति से गहराई से जुड़ा हुआ समाज है। डॉ. रावत ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि एकलव्य आवासीय विद्यालयों में पढ रहे बच्चे आगे चलकर देश और समाज का नाम रोशन करे। जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव कुंजीलाल मीना ने कहा कि राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों का चयन कर उन्हें राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भेजा जाएगा। आंध्रप्रदेश में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान के विद्यार्थी यदि बेहतरीन प्रदर्शन करें तो पूरे राज्य का गौरव और भी बढ़ेगा। समारोह में साध्वी कल्पयशा ने बच्चों को नशामुक्ति की प्रेरणा दी।

छात्रों ने किया सद्बुद्धि यज्ञ

उदयपुर, (कासं)। सुखाड़िया विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. सुनीता मिश्रा के विवादित बयानों के खिलाफ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का विरोध प्रदर्शन लगातार बुधवार को भी जारी रहा। कार्यकर्ताओं ने विश्वविद्यालय परिसर में अनोखे तरीके से सद्बुद्धि यज्ञ का आयोजन किया।

एबीवीपी के प्रांत सह मंत्री कुलदीप सिंह के नेतृत्व में विश्वविद्यालय और सभी संबद्ध महाविद्यालयों को बंद करवाकर विरोध दर्ज कराया। सुबह से ही कार्यकर्ताओं ने महाविद्यालय को बंद कर विद्याथिर्यों को आंदोलन में शामिल किया और विश्वविद्यालय परिसर में प्रशासनिक भवन के बाहर बड़ी संख्या में एकत्र हुए। इस दौरान नारेबाजी करते हुए कुलपति के इस्तीफे एवं बर्खास्त की मांग की गई। एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने सद बुद्धि यज्ञ भी किया। आहुति देकर प्रार्थना की गई कि कुलपति सही विवेक का पालन करें और भविष्य में आगे जाके कही ओर इस प्रकार बयान न दें।

विद्यार्थी परिषद के महानगर मंत्री पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय में जो विद्यार्थी प्रदर्शन कर रहे हैं वे गुंडे नहीं, बल्कि पढ़ने वाले छात्र हैं। वे कुलपति की मनमानी और अपमानजनक व्यवहार से परेशान होकर विरोध कर रहे हैं। राठौड़ ने आरोप लगाया कि असली गुंडई कुलपति प्रो.सुनीता मिश्रा ने की है। उन्होंने विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के साथ मारपीट की उन्हें नगर वधू तक कहा। इसके अलावा जनजाति वर्ग की छात्रा के साथ अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया और मेवाड़ के महापुरुषों का भी अपमान किया। अपने हक के लिए विरोध करना गुंडई नहीं है।उन्होंने कहा कि जब तक कुलपति प्रो.सुनीता मिश्रा को बर्खास्त नहीं किया जाता तब तक आंदोलन इसी तरह जारी रहेगा ओर भी उग्र रूप लेगा। प्रदर्शन में मिलिंद पालीवाल, गौतम बंधु, त्रिभुवन सिंह, पार्थ दीक्षित, विवेक पाटीदार, चंद्रकिरण, इंद्रा,ध्वनि, चिराग दायमा, विकास चौधरी, हिमांशु चितौड़ा, वीरेन्द्र मेघवाल, हर्ष राजानी, क्रिश मूनोत, अक्षिता राव, यशराज खिंची,युवराज सिंह आदि उपस्थित रहे।

शिक्षा अधिकारियों ने चखा भोजन

डूंगरपुर, (निसं)। मिड-डे-मील के सघन निरीक्षण के तहत बुधवार को एसीबीईओ डूंगरपुर विमल साद ने राउमावि सुरपुर का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मिड-डे-मिल कार्यक्रम के तहत संचालित गतिविधियों का निरीक्षण करते हुए मध्याह्न भोजन, खाद्यान्न एवं पन्नाधाय बाल गोपाल योजना के अंतर्गत पिलाए जाने वाले दूध की गुणवत्ता की जांच की। मौके पर उनके साथ साथ कार्यवाहक इंचार्ज लोकेश कुमार कलाल, व्याख्याता मनोहर परमार व ब्लॉक एमडीएम प्रभारी पोपटसिंह सिसोदिया ने विद्यार्थियों के साथ बैठकर भोजन कर भोजन के गुणवत्ता की प्रशंसा की। उन्होंने मिड-डे-मिल प्रभारी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कुक कम हेल्पर एवं विद्यार्थियों से मिड-डे-मिल कार्यत्र्रम के बारे में चर्चा की। इस दौरान शाला संबलन, ब्लॉक रैंकिंग,डीबीटी यूनिफॉर्म व ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना आदि ।

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-उदयपुर
(A State Govt.enterprise constituted under RHB Act 1970)
"salumber Chauhara, Sector 11, Udaipur-313002 Email-DHCUDPR.RHB@RAJASTHAN.GOV.IN

पत्र क्रमांकः-उप.आ.आ./वृत्त-उदय/2025-26/426 दिनांकः-18.8.2025 Registerd

-: जाहिर आम सूचना (दौहरा रजिस्ट्री नामान्तरण):-

आवास संख्या 6-F-28 आय वर्ग HIG माप 210.00 वर्ग मीटरयोजनापानेरियों की मादडीयोजना शहर उदयपुर का श्रीमुकेश गुप्ता पुत्र श्री सत्यव्रत शास्त्री को आवंटन पत्र क्रमांक 906दिनांक03.10.2011 को जारी कर दिनांक 26.04.2012 कोकब्जा दिया गया। श्री मुकेश गुप्ता पुत्र श्री सत्यव्रत शास्त्री ने उक्त आवास का बैचान श्री गुरूमुख कटारिया पुत्र स्व.श्री बुधरमल को किया गया। उक्त आवास का नियिमतिकरण एवं अदेय प्रमाण पत्र क्रमांक 301 दिनांक 14.06.2017, श्री गुरूमुख कटारिया पुत्र स्व.श्री बुधरमल को जारी किया गया। उक्त आवास का प्रथम पंजीयन दिनांक 03.07.2017 द्वारा श्री गुरूमुख कटारिया पुत्र स्व.श्री बुधरमल के पक्ष में निष्पादित करवाया गया।

पंजीयन उपरान्त श्री गुरूमुख कटारिया पुत्र स्व.श्री बुधरमल ने उक्त आवास का बैचान विक्रय पत्र (पंजीकृत) दिनांक 16.08.2017 द्वारा श्रीमती सोनिया पत्नी श्री पप्पु राव को किया गया। इस कार्यालय के पत्र क्रमांक 168 दिनांक 25.04.2018श्रीमती सोनिया पत्नी श्री पप्पु राव को नाम हस्तान्तरण कार्यालय आदेश जारी किया गया। ततपश्चात श्रीमती सोनिया पत्नी श्री पप्पु राव ने पुन: उक्त आवास का बैचान विक्रय पत्र (पंजीकृत) दिनांक 12.05.2025 द्वारा श्री नितीन भम्भानी पुत्र श्री दिलीप कुमार भम्भानी को किया गया। श्री नितीन भम्भानी पुत्र श्री दिलीप कुमार भम्भानी ने प्रार्थना पत्र एवं आवश्यक प्रपत्र, विक्रय पत्र (पंजीकृत) मण्डल के निर्धारित प्रपत्रों में प्रस्तुत कर इस कार्यालय में निवेदन किया है कि उक्त आवास को उनके नाम कर नाम प्रतिस्थापन कर दिया जावें।

अत: इस सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो 10, दिवस के अन्दर-अन्दर इस कार्यालय को सूचित करें अन्यथा आपत्ति नहीं होने के कारण आवास संख्या 6-F-28, पानेरियों की मादडी योजना, उदयपुर का नामान्तरण श्री नितीन भम्भानी पुत्र श्री दिलीप कुमार भम्भानी के पक्ष में हस्तानान्तरण कर मण्डल रिकार्ड में दर्ज कर दिया जायेगा।

उप आवासन आयुक्त
राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-उदयपुर

खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा : प्रो. हेमंत कोठारी

उदयपुर, (कासं)। पैसिफिक विवि की इंटर कॉलेज प्रतियोगिता के अंतर्गत कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता की मेजबानी पैसिफिक विवि के इंजीनियरिंग संकाय ने की। कार्यक्रम में कुल 8 टीमों ने शानदार प्रदर्शन किया। उद्घाटन समारोह का शुभारंभ पैसिफिक विवि के अध्यक्ष प्रो. हेमंत कोठारी के प्रेरणादायी उद्बोधन से हुआ।

प्रो. कोठारी ने अपने संबोधन में कहा कि खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। खेलों से न केवल शरीर स्वस्थ रहता है बल्कि टीम भावना, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता का भी विकास होता है। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढी को पढाई के साथ-साथ खेलों में भी सक्रिय भागीदारी करनी चाहिए। प्रो. दिलेंद्र हीरन, डीन, फैकल्टी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी ने अपने उत्साहवर्धक विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि खेलों में जीतने के लिए केवल शारीरिक शक्ति नहीं बल्कि मानसिक एकाग्रता और सही रणनीति भी आवश्यक है। कार्यक्रम मे पैसिफिक कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन के प्राचार्य डॉ. हेमंत पंड्या, कला संकाय के डीन प्रो. टी.पी. अमेटा, इंजीनियरिंग संकाय के समन्वयक अक्षत सिंह झाला और पैसिफिक कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन के उप प्राचार्य जितेन्द्र सिंह चुंडावत विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। संचालन चंद्रेश सोनी और रोहित दवे ने किया।

प्रथम स्थान पर पॉलिटेक्निक कॉलेज द्वितीय स्थान (रनर-अप) फार्मेसी कॉलेज, सर्वश्रेष्ठ खिलाडी संजय आहिर (फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग) पुरस्कार वितरण समारोह में पैसिफिक कॉलेज ऑफ टीचर्स एजुकेशन के प्राचार्य कपिलेश तिवारी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

फुटपाथ पर कैनोपी लगाकर व्यापार करने पर होगी सख्ती

डूंगरपुर, (निसं)। प्रधानमंत्री की ओर से भारत के 14० करोड देशवासी को कर में राहत देते हुए नेक्स जनरेशन जीएसटी रिफॉर्म-22 सितम्बर को लागू किया है। नवरात्रि के पहले दिन जीएसटी के टैक्स स्लैब में बदलाव का अधिक से अधिक लोगों को लाभ देने के लिए अब नगर परिषद डूंगरपुर की ओर से व्यापारियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। सभापति अमृत कलासुआ ने शहर में सभी छोटे-बडे व्यापारी और दूकानदार को आगामी त्यौहार पर अपने प्रतिष्ठान और दुकान को अच्छी, सुंदर सजावट करने का निवेदन किया है। उन्होंने कहा कि नगर परिषद की ओर से किसी भी स्थाई दूकानदार, व्यापारी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। उन्होंने कहा कि बाजार में कुछ लोग भ्रांतियां फैला रहे है। जिसमें शहर में दुकानों की सजावट करने पर नगर परिषद की ओर से जुर्माना लगाया जा रहा है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि शहर में किसी भी दुकानदार को सजावट और सुंदर डेकोरेशन करने की कोई परमिशन लेने की जरुरत नही है। अपने व्यापार से अधिक से अधिक लोगों को राहत देने का संदेश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भाजपा सरकार कर रही है। ऐसे में व्यापारी को भयमुक्त कार्य करते हुए देश की आर्थिक प्रगति में सहयोग करने का निवेदन किया। सभापति अमृत कलासुआ ने कहा कि शहर के सार्वजनिक स्थान, फुटपाथ, सडक के किनारे कोई भी केनोपी लगाकर व्यापार करने पर नगर परिषद की ओर से नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने बताया कि फुटपाथ आमजन के चलने के लिए बनाए गए है।

कार्यालय ग्राम पंचायत सती की चोरी, पंचायत समिति लसाडिया, जिला सलुम्बर (राज.)

क्रमांक:-2025-26/11 दिनांक:-20/09/2025

-:ई निविदा सूचना -01/2025-26:-

ग्राम पंचायत सती की चोरी में महानरेगा व अन्य योजनाओं के करवाये जा रहे कार्यों हेतु निर्माण सामग्री उपापन की निविदाएं दिनांक 02.10.2025 सायं 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN N0 1. ZUD2526GLOB02049

प्रशासक
ग्राम पंचायत सती
की चोरी पं.स. लसाड़िया
जिला-सलूम्बर

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत सती
की चोरी पं.स. लसाड़िया
जिला-सलूम्बर

फर्जी सीम से ठगी, मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। प्रतापनगर थाना पुलिस ने आरोपी के खिलाफ फर्जी सीम जरिये अवैध लेनदेन करने का प्रकरण दर्ज किया है। जानकारी के अनुसार पुलिस मुख्यालय जयपुर के निर्देश पर म्यूल अकाउंट के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के दौरान जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर हेडकांस्टेबल मुकेश कुमार द्वारा की गई पडताल में अविनाश पुजारी पुत्र अशोक पुजारी निवासी युआईटी कॉलोनी रोड़ नं. 2 पुरोहितों की मादड़ी द्वारा फर्जी सिम जारी कर कुशलगढ़ बांसवाड़ा निवासी विक्रमसिंह को बेचने एवं उसके द्वारा सीम का अवैध लेन देन करने में उपयोग करने की पुष्टि होने पर प्रकरण दर्ज करवाया।

समापन आज

डूंगरपुर, (निसं)। राउमावि बलवाडा की मेजबानी में स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में 69 वी बैडमिंटन 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा,खेलकूद प्रतियोगिता का समापन गुरुवार को स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में होगा। बुधवार को खेले गए मैचों में 17 वर्ष छात्र में एसडी इंटरनेशनल स्कूल डूंगरपुर विजेता व न्यू ऐरा पादरडी बडी उप विजेता रहे।

जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर, (कासं)। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के केंद्रीय संचार ब्यूरो की ओर से ग्राम पंचायत लोयरा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्वच्छोत्सव 2025 एवं केंद्र सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं पर मिनी प्रदर्शनी संगोष्ठी, मौखिक प्रशनोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम के दौरान पंचायत समिति बडगांव की प्रधान प्रतिभा नागदा ने उपस्थित दर्शकों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मानसिकता का विकास होता है इसी के मद्देनजर देश में स्वच्छता की महती आवश्यकता को देखते हुए हमारे प्रधानमंत्री ने स्वच्छता ही सेवा अभियान की शुरुआत की। हमें ये समझना चाहिये कि ये केवल सरकार का कार्य नहीं है, बल्कि समाज में रहने वाले हर इंसान की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि हमें खुद को, घर, अपने आसपास, समाज, समुदाय, शहर, उद्यान और पर्यावरण आदि को रोज स्वच्छ रखने की जरुरत है।

गरबा कार्यक्रमों में फूहड़ता को लेकर प्रदर्शन, ज्ञापन दिया

उदयपुर, (कासं)। गरबा कार्यक्रमों में अश्लील गानों,फूहड डांस पर रोक लगाने तथा गरबा में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के आधार की जांच की मांग को लेकर श्री एकलिंगनाथ राष्ट्रीय सेवा संगठन के संस्थापक अध्यक्ष आकाश बागडी के नेतृत्व में बुधवार को फिर से जिला कलेक्टर नमित मेहता व एएसपी उमेश ओझा को ज्ञापन दिया।

संगठन के संस्थापक अध्यक्ष आकाश बागडी ने बताया कि पूर्व में भी संगठन की ओर से कलेक्टर व एएसपी को ज्ञापन दिया और आग्रह किया कि गरबा कार्यक्रमों में अश्लील गानों,फूहड डांस पर रोक लगाने तथा गरबा में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के आधार की जांच हो। लेकिन इस सबंध में कोई कार्रवाई दिखाई नहीं दी। नवरात्रि महोत्सव के दौरान गरबा कार्यक्रम पूरे जिले में चल रहे हैं। कई जगहों पर संगठनों ने आगे बढ कर संस्कृति को बचाने का संकल्प लिया हैं। लेकिन अब भी कई जगहों पर फूहडता भरे गाने चल रहे हैं। पिछले दो दिनों में संगठन के कार्यकर्ता ऐसे गरबा संचालकों को समझाइश करने गए, लेकिन उन्होंने कार्यकर्ताओं के साथ बुरा बर्ताव किया। बागडी ने कहा कि एकलिंग नाथ सेवा संगठन नवरात्रि महोत्सव के दौरान पारंपरिक गरबा व डांडिया लोकनृत्य की आड में कार्यक्रमों में फूहड , अश्लील नृत्य, फिल्मी गाने तथा देवी देवताओं का रूप धर कर नाचने पर प्रतिबंध लागू करने की मांग कर रहा है। महासचिव एडवोकेट निर्मल पंडित ने कहा कि नवरात्रि महोत्सव मां दुर्गा के सम्मान में किए जाते हैं। लेकिन विगत कुछ वर्षो से ध्यान में आ रहा है कि व्यावसायिक तथा विकृत मानसिकता के कतिपय लोग गरबा डांडिया नाईट इवेंट की आड मे फूहड, अश्लील पहनावे को बढावा देकर, पश्चिमी संगीत पर डांस कर हमारी धार्मिक धरोहर को विकृत रूप में प्रस्तुत कर लाखों सनातनियों की भावना को आहत कर रहे हैं। बागडी ने बताया कि जिला कलेक्टर ने इस मामले में गंभीरता से कार्रवाई करने का भरोसा दिलाया है तथा कहा है कि फूहड तथा अश्लील गानों पर रोक लगाने के लिए वे सभी गरबा मंडलों को आदेश जारी करेंगे। एएसपी उमेश ओझा ने कहा कि इस साल पुलिस ने काफी कठोरता की है और 10 बजे तक चाय की थडियों पर एकत्र रहने वाले लोगों के खिलाफ भी कठोरता बरती जा रही है। प्रदर्शन के दौरान छात्रनेता धीरज डांगी, करण बागडी, लोकेश कुमार सहित संगठन के कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

pnb Housing Finance Limited

पंजीकृत कार्यालयः 9वाँ तल, अंतरिक्ष भवन, 22, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली-110001
शाखा कार्यालयः 7ए, कलेक्टोरेट और भीलवाड़ा रोड, चित्तौड़गढ़
शाखा कार्यालयः मेवाड़ मोटर बिल्डिंग, प्लॉट नंबर 17, 18, तोरण, बावरी स्टेशन रोड, उदयपुर-

प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 (1) के साथ पठित वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण एवं प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अध्याय ।।। की धारा 13 (2), अद्यतन संशोधित के अधीन सूचना

हम, पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड (इसमें आगे ''पीएनबी एचएफएल'' के रूप में वर्णित) ने कार्यालय शाखा कार्यालयः **7ए, कलेक्टोरेट और भीलवाड़ा रोड, चित्तौड़गढ़, मेवाड़ मोटर बिल्डिंग, प्लॉट नंबर 17, 18, तोरण, बावरी स्टेशन रोड, उदयपुर-** में स्थित हमारे **चित्तौड़गढ़, उदयपुर** कार्यालय द्वारा वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण एवं प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 (इसमें आगे ''अधिनियम'' के रूप में वर्णित) के अध्याय ।।। की धारा 13(2) अधीन माँग सूचना जारी की थी। उक्त माँग सूचना हमारे प्राधिकृत अधिकारी द्वारा निम्न वर्णित आप सब कर्जदारों/सह-कर्जदारों/जमानतदारों को जारी की गई थी, क्योंकि आपका खाता, किस्तों/ब्याज का भुगतान नहीं किए जाने के कारण, भारतीय रिजर्व बैंक/ राष्ट्रीय आवास बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार अनार्जक आस्ति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। उसकी विषयवस्तु आपके द्वारा मूलधन की किस्तों, ब्याज इत्यादि के भुगतान में की गई चूकों के साथ संबंधित है। बकाया राशि नीचे दी गई है। आगे, हमें कारणों के आधार पर विश्वास है कि आप माँग सूचना प्राप्त करने से बच रहे हैं और इसीलिए यह माँग सूचना प्रकाशित की जा रही है, जैसा कि उक्त अधिनियम की धारा 13(2) के अधीन अपेक्षित भी है। एतद्द्वारा आपसे उक्त राशि, अद्यतन ब्याज तथा अन्य राशियों सहित, जो भुगतान की तिथि तक देय हो सकती है, इस माँग सूचना के प्रकाशन की तिथि से 60 दिन की अवधि के भीतर पीएनबी एचएफएल को अदा करने की माँग की जाती है। जिसमें विफल रहने पर पीएनबी एचएफएल उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के प्रावधानों के अधीन, किसी एक या अधिक या सभी प्रत्याभूत आस्तियों के संबंध में आवश्यक कार्यवाही करेगा, जिसमें कर्जदारों तथा जमानतदारों की प्रत्याभूत आस्तियों का कब्जा प्राप्त किया जाना शामिल है।

आपका ध्यान वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण एवं प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13 की उप-धारा (8) के प्रावधानों की ओर आमंत्रित किया जाता है, जिसके तहत अधीन आप सम्पूर्ण बकाया राशि, पीएनबी एचएफएल द्वारा वहन की गई सभी लागतों, प्रभारों तथा व्ययों सहित, का भुगतान सार्वजनिक नीलामी, जनता से कोटेशन, निविदा आमंत्रण द्वारा अथवा गुप्त समझौते द्वारा प्रत्याभूत आस्तियों की बिक्री की सूचना के प्रकाशन की तिथि तक ही कर सकते हैं। कृपया यह भी नोट करें कि यदि सम्पूर्ण बकाया राशि, पीएनबी एचएफएल द्वारा वहन की गई सभी लागतों, प्रभारों तथा व्ययों सहित, का भुगतान सार्वजनिक नीलामी, जनता से कोटेशन, निविदा आमंत्रण द्वारा अथवा गुप्त समझौते द्वारा प्रत्याभूत आस्तियों की बिक्री की सूचना के प्रकाशन की तिथि तक नहीं किया जाता है, तो आप उसके पश्चात प्रत्याभूत आस्ति (यों) छुड़ाने के हकदार नहीं होंगे। आगे, आप के ऊपर, उक्त अधिनियम की धारा 13(13) के अधीन उपरोक्त प्रत्याभूत आस्तियों का बिक्री, पट्टा या किसी अन्य प्रकार से अंतरण करने के संबंध में रोक लगी है।

ऋण खाता संख्या	कर्जदार तथा सह-कर्जदार का नाम/पता	जमानतदार(रों) का नाम/पता	बंधक संपत्ति (याँ)	माँग सूचना की तिथि	माँग सूचना की तिथि तक बकाया राशि
NHL/RCHI/ 0624/1275905 बी.ओ.- चित्तौड़गढ़	**(कर्जदार) श्री/सुश्री उदय दास** लक्ष्मीपुरा बानसेन, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत-312001, **(कर्जदार), श्री/सुश्री उदय दास** बस स्टैंड, बानसेन, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत-312001, **(सह-कर्जदार) श्री/सुश्री मंजू बाई** लक्ष्मीपुरा बानसेन, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत-312001, **(कर्जदार) श्री/सुश्री उदय दास** पट्टा नंबर 02, बुक नंबर 192, खसरा नंबर 205, ग्राम जीपी बानसेन, पीएस भादसर, जिला चित्तौड़गढ़ राजस्थान, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, राजस्थान-312602, **(सह-कर्जदार) श्रीमान/सुश्री मंजू बाई** पट्टा नंबर 02, बुक नंबर 192, खसरा नंबर 205, ग्राम जीपी बानसेन, पीएस भादसर, जिला चित्तौड़गढ़ राजस्थान, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, राजस्थान- 312602	लागू नहीं	पट्टा संख्या 02, बुक संख्या 192, खसरा संख्या 205, ग्राम जी पी बानसेन, पी एस भदसर, जिला चित्तौड़गढ़ राजस्थान, चित्तौड़गढ़, चित्तौड़गढ़, राजस्थान- 312602	सितम्बर 05, 2025	रु. 8,01,098.00/- (आठ लाख एक हजार अठानवे रुपये मात्र)
HOU/RUDA/ 1123/1185713 बी.ओ.- उदयपुर	**(कर्जदार) श्री/सुश्री नवीन वैष्णव,** 727 जोगी तालाब, नेला पंचायती रोड, स्कूल के सामने देवाली, उदयपुर, राजस्थान, भारत-313001, **(कर्जदार) श्री/सुश्री नवीन वैष्णव,** वरदान सीनियर सेकेंडरी स्कूल, ऋषभदेव, उदयपुर, राजस्थान, भारत- 313001, **(सह-कर्जदार) श्री/सुश्री सुरभि राठौड़,** 727 जोगी तालाब, नेला पंचायती रोड, स्कूल के सामने सवीना, उदयपुर, राजस्थान, भारत-313001, **(सह-कर्जदार) श्री/सुश्री सुरभि राठौड़,** पारस हेल्थ, अस्पताल, शभागपुरा, उदयपुर, राजस्थान, भारत-313001, **(कर्जदार) श्री/सुश्री। नवीन वैष्णव,** आराजी नंबर 5075, 5076, 5077, प्लॉट नंबर 35, राजस्व ग्राम उमरड़ा, पटवार सर्कल उमरड़ा, उदयपुर, राजस्थान- 313001, **(सह-कर्जदार) श्री/सुश्री सुरभि राठौड़,** आराजी नंबर 5075, 5076, 5077, प्लॉट नंबर 35, राजस्व ग्राम उमरड़ा, पटवार सर्कल उमरड़ा, उदयपुर, राजस्थान- 313001	लागू नहीं	आराजी नंबर 5075, 5076, 5077, प्लॉट नंबर 35, राजस्व ग्राम उमर्दा, पटवारी सर्कल उमर्दा, उदयपुर, राजस्थान- 313001	सितम्बर 05, 2025	रु. 18,26,808.00/- (अठारह लाख छब्बीस हजार आठ सौ आठ रुपये मात्र)

दिनांक : 25-09-2025, स्थान : चित्तौड़गढ़, उदयपुर
हस्ता. /- प्राधिकृत अधिकारी, पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड

भारत के दबदबे के कारण भारत-पाक मैचों को अब प्रतिद्वंद्विता नहीं माना जाना चाहिए। उनकी टीम का ध्यान एशिया कप जीतने पर है।
- शाहीन अफरीदी

पाकिस्तान के गेंदबाज, भारत-पाक मैच को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

प्रसिद्ध कृष्णा

भारतीय तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा को ऑस्ट्रेलिया ए के ख़िलाफ दूसरे अनधिकृत टेस्ट मैच के दूसरे दिन बुधवार को भारत ए के लिए खेलते हुए सिर में चोट लग गई और उन्हें मैच से बाहर होना पड़ा। उन्हें भारत ए की पारी के 39वें ओवर में तेज गेंदबाज हेनरी थॉर्नटन के बाउंसर पर चोट लगी, जब वह उनके बाउंसर को पुल करने के चक्कर में अपने हेल्मेट पर गेंद खा बैठे। हालांकि तब अनिवार्य कन्कशन के बाद उन्होंने खेलना जारी रखा। भारत के इंग्लैंड दौरे पर तीन मैच खेलकर 14 विकेट लेने वाले प्रसिद्ध ने पहले अनाधिकृत टेस्ट में कुल 21 ओवर किए थे।

क्या आप जानते हैं ?... एशिया कप में सबसे ज़्यादा रन श्रीलंका के महान बल्लेबाज़ सनथ जयसूर्या के नाम हैं। उन्होंने 1990 से 2008 तक खेले 25 मैचों में 24 पारियों में कुल 1220 रन बनाए।

अभिषेक ने लगाई फिफ्टी, कुलदीप ने तीन विकेट लिये, बांग्लादेश को 41 रन से हराया

टीम इंडिया एशिया कप के फाइनल में

दुबई, 24 सितंबर। भारत ने बुधवार को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में सुपर फोर मुकाबले में बांग्लादेश को 41 रनों से हराया। इस जीत के साथ भारत ने एशिया कप 2025 फाइनल में जगह बना ली है। भारतीय टीम ने बुधवार को एशिया कप के सुपर फोर मुकाबले में बांग्लादेश को 41 रनों से हराया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए अभिषेक शर्मा के दमदार शतक की बदौलत 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 168 रन बनाए, इसके जवाब में बांग्लादेश की टीम 19.3 ओवर में सभी विकेट खोकर 127 रन ही बना सकी। बांग्लादेश के लिए सैफ हसन ने सर्वाधिक 69 रन बनाए। भारत की ओर से कुलदीप यादव ने तीन विकेट चटकाए। इस जीत के साथ भारतीय टीम एशिया कप 2025 फाइनल में पहुंच गई है, जहां उसका सामना पाकिस्तान या बांग्लादेश से होगा।

169 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरे बांग्लादेश की टीम को दूसरे ओवर में पहला झटका लगा। तंजीद हसन तीन गेंद में एक रन ही बना सके। इमॉन ने 19 गेंद में 21 रन बनाए। तौहीद 10 गेंद में सात रन बनाकर आउट हुए। शमीम हुसैन खाता नहीं खोल सके, उन्हें वरुण चक्रवर्ती ने आउट किया। कप्तान जाकिर अली 5 गेंद में 4 रन ही बना सके। सूर्यकुमार यादव ने उन्हें रन आउट किया। मोहम्मद सैफुद्दीन 7 गेंद में 4 रन बनाकर पवेलियन लौटे। सैफ ने 51 गेंद में 69 रन की पारी खेली।

भारतीय टीम ने बांग्लादेश के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 168 रन बनाए। बांग्लादेश के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत धीमी रही लेकिन पावरप्ले में ही दोनों बल्लेबाजों ने गियर बदले हैं और ताबडतोड़ रन बनाए। शुभमन गिल 19 गेंद में 29 रन बनाकर आउट हुए। शिवम दो रन ही बना सके। सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने 37 गेंद में 75 रन का योगदान दिया। सूर्यकुमार यादव 11 गेंद में 5 रन ही बना सके। तिलक वर्मा 7 गेंद में 5 रन बनाकर आउट हुए। हार्दिक पांड्या 29 गेंद में 38 रन बनाकर आउट हुए। अक्षर पटेल 15 गेंद में 10 रन बनाकर नाबाद रहे। बांग्लादेश के लिए रिशाद हुसैन ने दो जबकि मुस्तफिजुर रहमान, तंजीम हसन साकिब और मोहम्मद सैफुद्दीन ने एक एक विकेट लिए।

पैरा एथलीट्स ने प्रेरणादायक कबड्डी प्रदर्शनी मैच में चमक बिखेरी

जयपुर, 24 सितम्बर। जयपुर के एसएमएस इंडोर स्टेडियम ने बुधवार को दृढ़ संकल्प के एक अनोखे उत्सव का गवाह बना, जब पद्मश्री डॉ. दीपा मलिक के नेतृत्व वाली

व्हीलिंग हैप्पीनेस फ़ाउंडेशन ने कैप्री स्पोर्ट्स फ़ाउंडेशन के सहयोग से एक पैरा-एथलीट कबड्डी प्रदर्शनी मैच का आयोजन किया। यह मैच दो जोशीली टीमों - पैरा धाकड़ और पैरा वॉरियरज़ - के बीच खेला गया। इसमें विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं वाले पैरा-एथलीट्स शामिल थे, जिनमें हाथ (कलाई और कोहनी के ऊपर) और पैर (घुटने के ऊपर व नीचे) के अंग-विच्छेदन वाले खिलाड़ी तथा कमजोर अंगों वाले पोलियो सर्वाइवर्स थे। प्रत्येक टीम में 12 खिलाड़ी थे, जिन्होंने मैट पर बेहतरीन कौशल का प्रदर्शन किया। दिन के महत्व को और बढ़ाते हुए, प्रो कबड्डी लीग की बंगाल वॉरियरज़ टीम के खिलाड़ी भी पैरा-एथलीट्स का उत्साह बढ़ाने पहुंचे।

आईसीसी ने यूएसए क्रिकेट को किया निलंबित

दुबई, 24 सितम्बर। आईसीसी ने आखिरकार यूएसए क्रिकेट (यूएसएसी) को निलंबित करने का फैसला किया है। यह एक प्रमुख बाजार में खेल के नेतृत्व और संचालन ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन लाने के प्रयासों के तहत रीसेट बटन दबाने जैसा है। मंगलवार को एक वर्चुअल बैठक के बाद आईसीसी बोर्ड ने यह फैसला लिया। यूएसएसी के निलंबन का असर फरवरी में भारत और श्रीलंका में शुरू होने वाले टी20 विश्व कप में यूएसए की भागीदारी पर नहीं पड़ेगा। हालांकि निलंबन का विशिष्ट कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है, यह आईसीसी द्वारा जुलाई में अपनी वार्षिक आम बैठक में यूएसएसी को "स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव" कराने और "व्यापक" प्रशासनिक सुधार लागू करने के लिए तीन महीने का समय दिए जाने के लगभग दो महीने बाद आया है। उस समय, आईसीसी ने दोहराया था कि यूएसएसी जुलाई 2024 से "सूचना पर" बना रहेगा। आईसीसी बोर्ड ने यूएसएसी को यह भी चेतावनी दी थी कि वह सुधारों की प्रगति के आधार पर कोई भी उचित कार्रवाई करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। ईएसपीएन क्रिकइंफो ने यूएसएसी के अध्यक्ष वेणु पिसिके से टिप्पणी के लिए संपर्क किया है।

खेल मंत्रालय ने खिलाड़ियों और टीमों की भागीदारी के लिए चयन मानदंड जारी किए

नई दिल्ली, 24 सितंबर। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय ने एशियाई खेल 2026 और अन्य बहु-खेल आयोजनों में खिलाड़ियों और टीमों की भागीदारी के लिए चयन मानदंड जारी किए हैं। इसका उद्देश्य एक पारदर्शी और न्यायसंगत ढांचा तैयार कर यह सुनिश्चित करना है कि केवल उन एथलीटों को ही बहु-विषयक खेल आयोजनों में भागीदारी के लिए विचार किया जाए जिनके पास पदक जीतने का वास्तविक मौका है। चयन मानदंडों में मापनीय और गैर-मापनीय दोनों प्रकार की प्रतियोगिताओं के लिए मानक निर्धारित किए गए हैं जो एशियाई खेलों, पैरा एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों, एशियाई इनडोर खेलों, एशियाई समुद्र तट खेलों, युवा ओलंपिक, एशियाई युवा खेलों, राष्ट्रमंडल युवा खेलों जैसे बहु-खेल प्रतियोगिताओं में भागीदारी के बारे में निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत होंगे। हालांकि ओलंपिक और ऐसी अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं इसके दायरें में नहीं आएंगे जहां एथलीट या टीम की भागीदारी, संबंधित अंतरराष्ट्रीय महासंघों द्वारा निर्धारित योग्यता मानकों द्वारा निर्धारित की जाती है।

अभिषेक शर्मा ने रोहित शर्मा की महारिकॉर्ड को किया ध्वस्त

दुबई, 24 सितंबर। दुबई में भारत और बांग्लादेश के बीच एशिया कप 2025 सुपर-4 मुकाबला खेला जा रहा है। जहां टॉस गंवाकर भारतीय टीम पहले बल्लेबाजी कर रही है। वहीं, इस दौरान टीम इंडिया के युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा की शुरुआत धीमी रही लेकिन उन्होंने बाद में पारी को धार देने का काम किया। उन्होंने शुरुआती 9 गेंदों में 9 रन ही बनाए थे, लेकिन इस दौरान उन्होंने रोहित शर्मा का बड़ा रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिया। उन्होंने अपनी पारी के दौरान पहला छक्का लगा कर ये कारनामा किया है।

दरअसल, अभिषेक शर्मा ने जैसे ही एक छक्का लगाया वो टी20 एशिया कप में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। इससे पहले टी20 एशिया कप में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा छक्का लगाने वाले बल्लेबाज रोहित शर्मा थे जिन्होंने 9 मैचों में 12 छक्के जड़े थे, लेकिन अब अभिषेक उनसे आगे निकल गए हैं। फिलहाल, बांग्लादेश के खिलाफ इस मुकाबले में अब तक अभिषेक शर्मा ने महज 25 गेंदों में अपना अर्धशतक जड़ा है। इस टूर्नामेंट में उनका ये दूसरा अर्धशतक रहा। इससे पहले पाकिस्तान के खिलाफ भी उन्होंने अर्धशतकीय पारी खेली थी। इस अर्धशतकीय पारी के दौरान अभिषेक ने 5 चौके और 3 छक्के भी लगाए।

वैभव की आतिशी पारी से भारत अंडर-19 ने जीती सीरीज

ब्रिस्बेन, 24 सितम्बर। युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी की 70 रन की आतिशी पारी से भारत अंडर 19 ने दूसरे एकदिवसीय मैच में ऑस्ट्रेलिया अंडर 19 को बुधवार को 51 रन से हराकर तीन मैचों की सीरीज में 2-0 की अपराजेय बढ़त बना ली। भारतीय टीम ने 49.4 ओवर में 300 रन का मजबूत स्कोर बनाने के बाद ऑस्ट्रेलियाई टीम को 47.2 ओवर में 249 रन पर समेट दिया। सूर्यवंशी ने 68 गेंदों पर 70 रन में पांच चौके और छह छक्के लगाए। वैभव सूर्यवंशी के नाम अब यूथ वनडे में सबसे अधिक छक्कों (41) का रिकॉर्ड बन गया है, उन्होंने उन्मुक्त चंद का रिकॉर्ड तोड़ा। उन्होंने विहान मल्होत्रा के साथ दूसरे विकेट के लिए 117 रन की साझेदारी की। विवान ने 74 गेंदों पर 70 रन में सात चौके और एक छक्का लगाया। अभिज्ञान कुंडु ने 71 रन का योगदान दिया। कुंडू ने अपनी पारी में पांच चौके और दो छक्के लगाए। ऑस्ट्रेलियाई टीम इसके जवाब में जेडेन ड्रेपर (107) के शतक के बावजूद 249 रन पर सिमट गयी।आयुष म्हात्रे ने 27 रन देकर सर्वाधिक तीन विकेट लिए।

राज्य स्तरीय सीनियर पुरुष फुटबॉल प्रतियोगिता का कोटा में भव्य शुभारंभ

जयपुर, 24 सितम्बर। राजस्थान फुटबाल संघ के तत्वाधान में आयोजित राज्य स्तरीय सीनियर पुरुष फुटबॉल प्रतियोगिता का उद्घाटन आज कोटा के महाराव उम्मेद सिंह स्टेडियम फुटबॉल ग्राउंड पर हुआ आयोजन सचिव तीरथ सांगा ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान राजेश बिरला अध्यक्ष नागरिक सहकारी बैंक, अध्यक्षता लव शर्मा नेता प्रतिपक्ष विशिष्ट अतिथि भावना शर्मा कुल सचिव तकनीकी विवि. कोटा, दिलीप सिंह शेखावत सचिव राजस्थान फुटबाल वा इ बी सिंह जिला खेल अधिकारी कोटा, महेंद्र सिंह बिजानिया अध्यक्ष रेफरी बोर्ड राजस्थान रहे उद्घाटन मैच कोटा वह राजसमंद के मध्य खेला गया जिसमें कोटा ने 2-0 से जीत

दर्ज की इस मैच के मैन ऑफ द मैच यश साहनी रहे उक्त प्रतियोगिता का आयोजन कोटा के तीन खेल मैदाने पर किया जा रहा है जिसमें उमेश सिंह स्टेडियम विजय वीर क्लब मैदान मल्टीपरपज स्कूल मैदान जिला फुटबाल संघ अध्यक्ष कमल गोस्वामी ने बताया कि आज प्रतियोगिता के अन्य मेंचो में अलवर ने धौलपुर को 8,-0 से हराया, उदयपुर ने चूरु को 4-0 से हराया हनुमानगढ़ ने नागौर को 3-0 से हराया ,जोधपुर ने भीलवाड़ा को 3-0 से हराया, डूंगरपुर ने बूंदी को 2-0 जीरो से हराया झुंझुनू ने सवाई माधोपुर को 6-2 से हराया इन सभी टीमों ने अपने-अपने मैच जीतते हुए अगले राउंड में प्रवेश किया कल प्रतियोगिता के अगले राउंड के मैच खेले जाएंगे इस अवसर पर इस अवसर पर जिला फुटबाल संघ के पदाधिकारी जीवन सैनी ,मधु बिश्नोई ,उमेश विजय ,आफताब अहमद ,दिनेश शर्मा, मनमीत कौर, राष्ट्रीय खिलाड़ी प्रवीण विजय, फुटबॉल कोच मधु चौहान ,जगदीश चौधरी ,अजय कटवाल ,इकबाल खान धर्म प्रकाश शर्मा, जुबेर खान, आशीष मीणा, राजा खान, प्रदीप दर, आदि उपस्थित रहे।

सभी अल्पकालीन प्रशिक्षकों को अधिक से अधिक रजिस्ट्रेशन करवाने के निर्देश

जयपुर, 24 सितम्बर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्म दिवस के उपलक्ष में आयोजित होने वाले सांसद खेल महोत्सव में अधिक से अधिक खिलाडियों के भाग लेने के लक्ष्य को मध्यनजर रखते हुए क्षेत्रीय खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र, जयपुर के मुख्य खेल अधिकारी और द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित श्री वीरेन्द्र पूनिया ने बुधवार को सवाई मानसिंह स्टेडियम में परिषद के अल्पकालीन खेल प्रशिक्षको की बैठक ली। वीरेन्द्र पूनिया ने सवाई मानसिंह स्टेडियम, चौगान स्टेडियम और विधाधर नगर स्टेडियम में होने वाले इस आयोजन में खिलाडियों को अधिक से अधिक भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए रजिस्टेशन बढाने के लिए प्रशिक्षको को निर्देश दिए। सभी खेल प्रशिक्षको को खिलाडियों के साथ-साथ आस पडोस में रहने वाले लोगो को भी सांसद खेल महोत्सव में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए गए है। वीरेन्द्र पूनिया ने सांसद खेल महोत्सव को सफल बनाने के लिए प्रशिक्षको आज से ही इस कार्य में जुटने और अधिक से अधिक रजिस्टेशन करवाने की हिदायत दी।

राजधानी

प्रधानमंत्री मोदी व गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ दायर याचिका खारिज

राजस्थान हाईकोर्ट ने याचिकर्ता पर 50 हजार का हर्जाना भी लगाया

-कार्यालय संवाददाता-

- नागरिकता संशोधन अधिनियम को लेकर अदालत में दायर की गई थी याचिका
- अदालत ने कहा कि "न्याय पाने के अधिकार को गलत याचिका दायर करने के लाइसेंस के रूप में इस्तेमाल की अनुमति नहीं दी जा सकती।"

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और पूर्व कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद के खिलाफ नागरिकता संशोधन अधिनियम को लेकर दायर याचिका को खारिज कर दिया है। इसके साथ ही अदालत ने याचिकाकर्ता पर 50 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। अदालत ने प्रतिवादी बनाए गए मोदी और शाह सहित रविशंकर प्रसाद को छूट दी है कि वे चाहे तो याचिकाकर्ता के खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश अधिवक्ता पूरणचन्द्र सेन की आपराधिक याचिका को खारिज करते हुए दिए।

अदालत ने कहा कि न्याय पाने के अधिकार को गलत याचिका दायर करने के लाइसेंस के रूप में इस्तेमाल की अनुमति नहीं दी जा सकती। वहीं एक अधिवक्ता से अपेक्षा की जाती है कि वह किसी भी मुकदमे को शुरू करने से पहले जनहित में उसकी तथ्यों को सत्यापित करे। इसके साथ ही उसे सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए सनकी तरीके से कार्य नहीं करना चाहिए। इसके अलावा केवल याचिकाकर्ता की शिकायत पर यह नहीं माना जा सकता कि नागरिकता संशोधन विधेयक के पारित होने के बाद अव्यवस्था की स्थिति पैदा हुई है। याचिकाकर्ता की ओर से लगाए गए आरोप न केवल पक्षकारों की छवि को धूमिल करने वाले हैं, बल्कि सांप्रदायिक हिंसा पैदा करने का भी एक प्रयास है।

याचिका में कहा गया कि नागरिकता संशोधन कानून संविधान के प्रावधानों के खिलाफ है और इसे मुस्लिम व धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के लोगों पर अत्याचार करने के इरादे से लाया गया है। कानून के कारण देश में वैमनस्यता का माहौल बन गया है। इस संबंध में उसने पीएम, गृह मंत्री और तत्कालीन कानून मंत्री के खिलाफ निचली अदालत में परिवाद दिया था, लेकिन अदालत ने उसे खारिज कर दिया।

इसके विरोध में केन्द्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और एएसजी आरडी रस्तोगी ने कहा कि नागरिकता संशोधन कानून किसी भी धर्म का विरोधी नहीं है। वहीं देश में बनने वाला कोई भी कानून गृह मंत्री, कानून मंत्री या प्रधानमंत्री नहीं बनाते हैं। कानून संसद की ओर से बनाया जाता है। ऐसे में पीएम मोदी और दोनों मंत्रियों पर आरोप लगाना गलत है। याचिकाकर्ता ने कानून का दुरुपयोग किया है। ऐसे में उसकी याचिका को भारी हर्जाने के साथ खारिज किया जाना चाहिए। दूसरी ओर महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि याचिकाकर्ता ने जो मुद्दा उठाया है, वह संबंधित निचली अदालत के क्षेत्राधिकार में नहीं आता है। इसलिए निचली अदालत ने परिवाद को खारिज कर कोई गलती नहीं की है।

मुख्यमंत्री ने जारी किया प्रवासी राजस्थानी दिवस का "लोगो"

26 सितंबर को हैदराबाद में होगी प्रवासी राजस्थानी मीट

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर प्रवासी राजस्थानी दिवस के प्रतीक चिन्ह (लोगो) का अनावरण किया। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 10 दिसम्बर को जयपुर में पहली बार प्रवासी राजस्थानी दिवस का आयोजन किया जाएगा। इसकी तैयारी के तहत 26 सितंबर को हैदराबाद में एक विशेष प्रवासी राजस्थानी मीट आयोजित की जाएगी, जिसकी अध्यक्षता स्वयं मुख्यमंत्री करेंगे।

मुख्यमंत्री ने बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रवासी राजस्थानियों के इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए योजनाबद्ध और प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि यह मीट प्रवासी राजस्थानियों, उद्यिमयों और सरकारी प्रतिनिधियों के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराएगी, जिससे आपसी सहयोग को बल मिलेगा और निवेश के नए अवसर खुलेंगे। शर्मा ने कहा कि प्रवासी राजस्थानियों ने राज्य के बाहर रहते हुए भी सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब समय है कि वे राज्य के औद्योगिक और विकासात्मक सफर में भी साझेदार बनें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार निवेश को बढ़ावा देने और उद्यिमता के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।हैदराबाद में होने वाली मीट में सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रवासी राजस्थानियों को सम्मानित किया जाएगा। इस कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री निवेशकों से भी सीधा संवाद करेंगे और उन्हें राज्य की निवेश नीतियों, योजनाओं और नवाचारों से अवगत कराया जाएगा।बैठक में संबंधित विभागों के अधिकारियों ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से मीट की तैयारियों की जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने प्रचार-प्रसार पर विशेष बल देते हुए कहा कि देश-विदेश में बसे अधिक से अधिक प्रवासी राजस्थानी इस आयोजन से जुड़ें। यह पहल प्रवासी राजस्थानियों और राज्य सरकार के बीच संबंधों को प्रगाढ़ बनाने और राज्य के सर्वांगीण विकास में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर प्रवासी राजस्थानी दिवस के प्रतीक चिन्ह (लोगो) का अनावरण किया।

रोहित कुमार सिंह भारतीय विज्ञापन मानक परिषद के गवर्निंग बोर्ड में नियुक्त हुए

जयपुर। उपभोक्ता मामलों के पूर्व सचिव रोहित कुमार सिंह को भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (एएससीआई) द्वारा गवर्निंग बोर्ड में प्रतिष्ठित व्यक्ति श्रेणी में नियुक्त किया गया है। सिंह, जो भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के पूर्व अधिकारी हैं, ने भारत सरकार के उपभोक्ता मामले विभाग में सचिव के रूप में कार्य किया है। सिंह ने अपनी शिक्षा भारत और विदेश में की। उन्होंने आईआईटी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और फिर अमेरिका के क्लार्कसन विश्वविद्यालय से कंप्यूटर इंजीनियरिंग में पोस्टग्रैजुएट की डिग्री पूरी की। इसके बाद, उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से लोक प्रशासन में मास्टर की डिग्री हासिल की।

नाबालिग के साथ दुष्कर्म करने वाले युवक को आजीवन कारावास

जयपुर । पॉक्सो मामलो की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर द्वितीय ने नाबालिग के साथ कई बार दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त सूरज शर्मा उर्फ दुर्गेश को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी विकास कुमार ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्त ने उसे उसकी अश्लील फोटो दिखाकर और धमकी देकर कई बार दुष्कर्म किया है। यदि अभियुक्त के प्रति नरमी का रुख अपनाया गया तो इससे अपराधियों के हौसले बुलंद होंगे।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक मातादीन शर्मा ने बताया कि पीडिता के पिता ने 15 जून, 2021 को कालवाड थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा कि उसकी मार्च, 2003 में जन्म बेटी दो साल की उम्र से ही अपने नाना के घर रहती है। पिछले कुछ दिनों से उदास रहने के चलते वह उसे अपने घर ले आया था। यहां पीडिता ने उसे बताया कि नाना के घर रहने के दौरान अभियुक्त ने उससे जबरन दोस्ती कर ली थी।

वहीं घर वालों को जान से मारने की धमकी देकर अभियुक्त ने उसके साथ अलग-अलग जगह पर कई बार दुष्कर्म किया और अश्लील फोटो भी खींच ली। पीडिता ने यह भी बताया कि उसके पिता लेने आए तो अभियुक्त ने बाड़े में आकर उसे जबरन साथ ले जाना चाहा, लेकिन पीड़िता के शोर मचाने पर वह मौके से भाग गया। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया। वहीं अभियुक्त की ओर से कहा गया कि पीडित पक्ष उससे वसूली करना चाहता है। ऐसे में उसे जबरन फंसाया गया है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अभियुक्त को सजा सुनाई है।

'किसानों को उर्वरक बीज देना सरकार का प्रमुख ध्येय'

जयपुर । कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल लाल ने कहा कि राज्य सरकार किसानों को उच्च क्वालिटी के उर्वरक, बीज और पेस्टिसाइड उपलब्ध कराने के लिए सदैव प्रयासरत है और किसानों को अन्य गुणवत्तायुक्त बीज हर हाल में उपलब्ध करवाया जायेगा।

निम्न गुणवत्ता युक्त खाद, पेस्टिसाइड और बीज उपलब्ध कराने वाली विनिर्माता और दुकानदारों पर सख्त रुख अपनाते हुए लाइसेंस निरस्तिकरण तक की कार्यवाहियां अमल में लाई जायेंगी।

इसी क्रम में मैसर्स जय शंकर सीड्स प्रा. लि. को बीज उत्पादन कार्यक्रम में पाई गई अनियमित्ताओं के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

कृषि मंत्री ने शनिवार व रविवार को श्री गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले के कई इलाकों में उगाये जा रहे बीज का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान हनुमानगढ जिले के पीलीबंगा क्षेत्र में मैसर्स जय शंकर सीड्स प्रा.लि. द्वारा उगाये जा रहे बीज में अनियमित्ताएं मिली।

प्रदेश में 29 सितंबर तक जारी रहेगा "जीएसटी बचत उत्सव"

जयपुर । राज्य सरकार द्वारा 22 से 29 सितम्बर तक "जीएसटी बचत उत्सव" का आयोजन किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य प्रदेशवासियों को जीएसटी दरों में हुई कटौती का लाभ दिलाना और स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन देना है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस अवसर पर प्रदेशवासियों, व्यापारियों एवं दुकानदारों से विशेष अपील की है कि वे उपभोक्ताओं तक दरों में कटौती का लाभ पूरी तरह पहुंचाएं। मुख्यमंत्री ने अपने वीडियो संदेश में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने जीएसटी स्लैब में सरलीकरण करते हुए अब मुख्य रूप से दो दरें - 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत लागू की हैं। इस निर्णय से रोजमर्रा की उपयोगी वस्तुओं की कीमतों में कमी आई है, जिससे गरीब, किसान, मध्यम वर्ग, व्यापारी एवं उद्योग जगत को राहत मिलेगी। शर्मा ने प्रदेशवासियों से "वोकल फॉर लोकल" के संकल्प को साकार करने की भी अपील की है। उन्होंने नवरात्रि एवं आगामी त्योहारों के दौरान देश में निर्मित वस्तुओं की खरीद को प्राथमिकता देने की बात कही, जिससे स्थानीय कारीगरों और उद्यिमयों को बल मिलेगा। मुख्यमंत्री स्वयं भी "जीएसटी बचत उत्सव" को सफल बनाने के लिए विभिन्न शहरों में व्यापारियों से संवाद कर रहे हैं। हाल ही में उन्होंने जयपुर के मानसरोवर क्षेत्र और भीलवाड़ा के सदर बाजार में व्यापारियों से मुलाकात कर उन्हें उत्सव की जानकारी दी और प्रतिष्ठानों पर संबंधित स्टीकर्स भी लगाए। राज्य सरकार का यह प्रयास उपभोक्ताओं को राहत देने के साथ-साथ स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय कदम माना जा रहा है।

- इसका उद्देश्य प्रदेशवासियों को जीएसटी दरों में हुई कटौती का लाभ दिलाना और स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन देना : मुख्यमंत्री

लेह में भारी हिंसा, भाजपा कार्यालय को आग लगाई, चार की मौत, कई घायल

- **लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के मुद्दे पर चल रहे आंदोलन के हिंसक रुप लेने के खिलाफ विख्यात एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक ने 15 दिन की भूख हड़ताल वापस ले ली।**
- **हिंसा तब भड़की जब सोनम वांगचुक के साथ भूख हड़ताल कर रहे दो लोगों की तबियत बिगड़ गई और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।**

लेह, 24 सितंबर। लद्दाख़ को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर लेह में छात्रों ने हिंसक प्रदर्शन किया है। जानकारी के अनुसार, भाजपा दफ्तर में आगजनी की गई। हिंसक झड़प में 4 लोगों की मौत हो गई है जबकि कई अन्य घायल हैं। हिंसक प्रदर्शन के बाद लेह में धारा 163 लागू कर दी गई है। एक साथ पांच या उससे ज़्यादा लोगों के जमा होने पर रोक लगा दी गई है। बिना इजाज़त के जुलूस या प्रदर्शन पर भी पाबंदी है।

वहीं, लद्दाख के उपराज्यपाल कविंदर गुप्ता ने लेह शहर में हुई हिंसक घटना की कड़ी निंदा की है, उपराज्यपाल ने दुखद मौतों पर गहरा दुख व्यक्त किया और शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की।

एक अधिकारी ने बताया कि लद्दाख को राज्य का दर्जा देने और छठी अनुसूची के विस्तार की मांग को लेकर प्रदर्शनकारियों ने हिंसा की और भाजपा कार्यालय और कई वाहनों पर हमला किया, जिसके बाद स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए पुलिस को फायरिंग करनी पड़ी।

हिंसक प्रदर्शन के बाद सोनम वांगचुक ने 15 दिनों का अनशन तोड़ दिया। उन्होंने प्रदर्शनकारियों से हिंसा रोकने की अपील की। उन्होंने कहा कि शांतिपूर्ण रास्ते का प्रयास विफल हुआ है।

लद्दाख की हालात को स्थिर करने के लिए सीआरपीएफ की चार कंपनियों (कुल मिलाकर 4 सौ जवान मौजूद हैं) को कश्मीर से लद्दाख भेजा गया। इससे पहले सीआरपीएफ की सात कंपनियां लद्दाख में पहले से ही तैनात है जिसमें कुल मिलाकर 700 जवान हैं।

हिंसक प्रदर्शन के बाद बुधवार को प्रशासन ने लद्दाख के लेह जिले में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर दी। निषेधाज्ञा के तहत पांच या इससे अधिक व्यक्तियों के एकत्र होने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। लेह के जिला मजिस्ट्रेट रोमिल सिंह डोंक ने निषेधाज्ञा आदेश जारी कर कहा कि इस आदेश का कोई भी उल्लंघन होने पर बीएनएस की धारा 223 के तहत दंडात्मक कार्रवाई की जायेगी।

भारतीय आईटी प्रोफैशनल्स ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आकर्षक है, ख़ासकर उन लोगों के लिए जो यूरोप जाने को तैयार हैं। जर्मनी के नए "ऑपर्च्युनिटी/चांसनकार्टे" कदमों का उद्देश्य कुशल पेशेवरों को, तत्काल एम्प्लॉयर स्पॉन्सरशिप के बिना भी अवसर देना है। जो तकनीकी प्रतिभाएं सामाजिक सुरक्षा, रिसर्च लिंक और यूरोपीय बाज़ारों की निकटता को महत्व देती हैं, उनके लिए जर्मनी (और पूरा यूरोपीय संघ) भरोसेमंद विकल्प है, हालाँकि गैर-अंग्रेज़ी वर्कप्लेस और कागज़ी प्रक्रिया कुछ लोगों के लिए मुश्किल हो सकते हैं।

ब्रेक्ज़िट के बाद ब्रिटेन ने ग्लोबल टैलेंट रूट जैसे वीज़ा और विशेषज्ञों को आकर्षित करने के लिए समय-समय पर नियमों में ढील देकर प्रतिभाओं को लुभाने की कोशिश की है। लंदन के वित्तीय और तकनीकी क्षेत्र आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। लेकिन स्किल्ड वर्कर लिस्ट और वेतन सीमा में हाल के बदलावों से अनिश्चितता बढ़ी है। इसलिए ब्रिटेन वरिष्ठ विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं के लिए तो आकर्षक है, पर बड़े पैमाने पर जूनियर आईटी स्टाफ़ के देश में आने के लिए उतना भरोसेमंद नहीं।

सिंगापुर ने ओवरसीज़ नेटवर्क्स एंड एक्सपर्टीज़ पास (वन पास) जैसे प्रीमियम वीज़ा शुरू किए हैं जो ऐसे वरिष्ठ नेताओं, संस्थापकों और ऊँची आय वालों के लिए आदर्श हैं, जो एक संक्षिप्त, व्यवसाय अनुकूल शहर-राज्य और फास्ट रैज़िडेंसी बेनिफिट (लाभ) पसंद करते हैं। यूएई की गोल्डन/ग्रीन वीज़ा निवेशक स्कीम, निवेशकों, उच्च आय वाले पेशेवरों और विशेष प्रतिभाओं को लंबे समय की रैज़िडेंसी देती है। यह उन लोगों के लिए आकर्षक है जो टैक्स की सुविधा, ऊँचे वेतन और भारत के नज़दीक रहने को प्राथमिकता देते हैं। ये वीज़ा शुरुआती इंजीनियरों के लिए कम उपयोगी हैं लेकिन वरिष्ठ प्रतिभा और उद्यिमयों के लिए बहुत आकर्षक हैं। बड़ी टेक कंपनियाँ और धनवान बहुराष्ट्रीय निगम अब भी अमेरिका में प्रतिस्पर्धा कर पाएँगे क्योंकि वे ऊँचे वेतन स्तर की मांग पूरी कर सकते हैं। इसलिए उन्हें सबसे कम नुकसान होगा। सबसे ज़्यादा असर जूनियर पेशेवरों, छोटे-मझोले उद्यमों और स्टार्टअप्स पर पड़ेगा जो कम वेतन पर वैश्विक भर्ती करते हैं। कैनडा, यूरोप के कुछ हिस्से और खाड़ी देश शुरुआती से मिड-करियर भारतीयों को सबसे ज़्यादा आकर्षित करेंगे, जबकि सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया मिड से सीनियर प्रतिभा को अपनी तरफ खींचेंगे।

अगर दूसरे देश आसान या त्वरित रैज़िडेंसी की पेशकश करते हैं तो भारत से युवा कोडर्स और मिड-करियर विशेषज्ञों का पलायन हो सकता है। एच-1 बी पर निर्भर एम्प्लॉयरों को या तो वेतन में बड़ा इज़ाफ़ा करना होगा, भर्ती रणनीतियाँ बदलनी होंगी (जैसे अमेरिका में स्थानीय टीम बनाना) या भर्ती के भौगोलिक विकल्प बढ़ाने होंगे। उम्मीदवारों के लिए अब वेतन और दीर्घकालिक सुरक्षा के बीच संतुलन महत्वपूर्ण होगा: कैनडा और ऑस्ट्रेलिया स्थायी निवास का साफ रास्ता देते हैं, यूरोप जीवनशैली और सामाजिक लाभ देता है, जबकि सिंगापुर और यूएई ऊँची आय और भारत की नज़दीकी का फायदा देते हैं।

'बिहार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने कहा कि जीएसटी में सुधार लाने में आठ साल लग गए, और अब सरकार अपनी पीठ खुद थपथपा रही है।

उन्होंने आरोप लगाया कि हर आर्थिक सुधार पर भाजपा ने विपक्ष में रहते हुए जो रुख अपनाया, सत्ता में आने पर उसका उल्टा रुख लिया। पायलट ने कहा कि बिहार में हाल ही में निकाली गई वोटर अधिकार यात्रा को अभूतपूर्व समर्थन मिला है और राज्य में बदलाव का स्पष्ट माहौल है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और महागठबंधन की सभी पार्टियाँ एकजुट होकर एनडीए के खिलाफ मजबूती से लड़ रही हैं। पायलट ने कहा, अमेरिका भारत पर आर्थिक हमला कर रहा है और हम उसका जवाब तक नहीं दे पा रहे हैं।"

उन्होंने यह भी जोड़ा कि पीएम मोदी और ट्रंप की मित्रता देश के लिए बहुत भारी पड़ रही है। सचिन पायलट ने जाति जनगणना पर कहा कि सरकार को जातिगत जनगणना को महज औपचारिकता न बनाकर उसे इस तरह कराना चाहिए जिससे वास्तविक सामाजिक भागीदारी का चित्र सामने आए। सिर्फ जनगणना के कॉलम में जाति जोड़ने से काम नहीं चलेगा। पायलटन ने चुनाव आयोग की भूमिका पर भी सवाल उठाया और कहा कि राहुल गांधी द्वारा उठाए गए "वोट चोरी" के मुद्दों पर जाँच शुरु करने के बजाय आयोग उनसे शपथ पत्र माँग रहा है।

उन्होंने आरोप लगाया, जब सवाल चुनाव आयोग से पूछे जाते हैं, तो जवाब भाजपा की तरफ से आता है। उन्होंने दोहराया कि बिहार चुनावों को स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी ढंग से कराना चुनाव आयोग की संवैधानिक जिम्मेदारी है। जब पायलट से पूछा गया कि कांग्रेस अभी तक राजद नेता तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित क्यों नहीं कर रही, तो उन्होंने कहा, सभी निर्णय सही समय पर लिए जाएंगे।

मल्लिकार्जुन खड़गे दो साल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दी जाती है, न कि पूर्णकालिक महासचिव की। एक बार सीडब्ल्युसी में शामिल होने के बाद वे आधिकारिक महासचिव के रूप में कार्य कर सकते हैं। एके एंटनी और अंबिका सोनी को हटाने की कोशिश मुख्यत: उम्र कारक से प्रेरित मानी जा रही है। एंटनी (84 वर्ष) 2022 से ही राजनीति से दूर हैं, जबकि 82 वर्षीय अंबिका सोनी अब भी सक्रिय हैं। एंटनी को अपने बेटे अनिल के भाजपा में शामिल होने से उन्हें व्यक्तिगत रूप से शर्मिंदगी उठानी पड़ी। अंबिका सोनी का प्रभाव सोनिया गांधी की कृपा से लंबे समय तक रहा है। उनके दौर (1998-2022) में कई नेता उन्हें 'सोनिया माइनस ए' कहा करते थे। उनके कई समर्थक भी थे जैसे कमलनाथ, सलमान खुर्शीद, कुमारी शैलजा और पवन बंसल आदि।

चुनावी राज्य बिहार कांग्रेस के लिए चुनौती बना हुआ है, जहाँ राहुल गांधी ने 1300 किलोमीटर लंबी 'वोट अधिकार यात्रा' निकाली। इस यात्रा में तेजस्वी यादव, दीपंकर भट्टाचार्य, एमके स्टालिन, अखिलेश यादव जैसे महागठबंधन और इंडिया गठबंधन के नेता शामिल हुए। राहुल गांधी ने बड़ी भीड़ खींची और अच्छी भाषण शैली से अपने विरोधियों को भी प्रभावित किया।

हालांकि, कांग्रेस के आंतरिक मूल्यांकन से पता चलता है कि यह यात्रा वोटों में तब्दील नहीं हो पाएगी। कांग्रेस के सूत्र मानते हैं कि यह अभियान दिखावे में तो जोरदार था, लेकिन मुद्दों पर कमजोर रहा। वोटिंग अधिकार का मुद्दा भी विरोधाभासी रहा - जिनका नाम वोटर लिस्ट में है वे संतुष्ट हैं, और जिनका नाम गायब है, वे वोट नहीं डाल पाएंगे, इसलिए चुनाव में उनका असर सीमित रहेगा। जमीनी स्तर पर कांग्रेस का संगठन बेहद कमजोर और असंगठित है, जिससे प्रभावी जनसंपर्क मुश्किल है। इसके अलावा, कांग्रेस की ओर से तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित न करने से और भ्रम की स्थिति पैदा हो रही है। तेजस्वी मानते हैं कि वे महागठबंधन के स्वाभाविक मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार हैं। उनके करीबी सूत्रों के अनुसार, उन्हें उम्मीद थी कि राहुल गांधी 'वोट अधिकार यात्रा' के दौरान उन्हें औपचारिक रूप से सीएम उम्मीदवार घोषित करेंगे।

केरल में भी कलह बड़ी समस्या है। यहां 'वोट वाइब' एजेंसी के अनुसार, शशि थरूर पिनराई विजयन के उत्तराधिकारी के रूप में सबसे लोकप्रिय विकल्प हैं। थरूर की लोकप्रियता 28.4 प्रतिशत है, जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस नेता काफी पीछे हैं। संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल 4.2 प्रतिशत, वी.डी. सतीशन 15 प्रतिशत, सनी जोसेफ 2 प्रतिशत, रमेश चेन्निथला 8.2 प्रतिशत, और के मुरलीधरन 6 प्रतिशत पर हैं।

17 फरवरी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सकते हैं। परीक्षा देश के अलावा अन्य 26 अन्य देशों में भी आयोजित की जायेगी। उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन हर विषय की परीक्षा के लगभग 10 दिन बाद शुरू होगा और इसके 12 दिनों के अंदर पूरा होने की उम्मीद है। उदाहरण के लिए, अगर 12वीं की भौतिकी की परीक्षा 20 फरवरी 2026 को होगी तो मूल्यांकन 3 मार्च से शुरू होगा और 15 मार्च तक चलेगा।

एसआई ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सामने आया कि तीनों आरोपियों ने पेपर लीक माफिया के जरिए परीक्षा से पहले सॉल्वड पेपर हासिल किया था। फिर उसे पढ़कर लिखित परीक्षा पास की। परमेश चौधरी ने मेरिट में 180 वीं,, मनोहर सिंह जाट ने 38वीं और मनोहर लाल विश्नोई ने 171वीं रैंक हासिल कर एसआई भर्ती में नियुक्ति हासिल की।

सुप्रीम कोर्ट ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पढ़कर वे लिखित परीक्षा में ना सिर्फ उत्तीर्ण हुए, बल्कि इंटरव्यू में भी आर.पी.एस.सी. सदस्यों की मिलीभगत से अच्छे अंक ला पाए।

याचिकाकर्ताओं का कहना था कि इस मामले की जांच में हर सप्ताह पेपरलीक के आरोपी गिरफ्तार किए जा रहे हैं, जिनकी संख्या अब तक 77 हो चुकी है। आज सुनवाई के दौरान भी 3 ट्रेनी एस.आई. पकड़े गए हैं। ऐसे में अगर एस.आई. भर्ती परीक्षा रद्द करने के आदेश पर अंतरिम रोक लगाई जाए तो इससे आमजन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि, राजस्थान हाईकोर्ट की एकलपीठ ने जिन रिपोर्ट्स के आधार पर एस.आई. भर्ती को रद्द करने योग्य माना था, खंडपीठ ने उन रिपोर्ट्स को अप्रमाणित माना है।

इसके जवाब में राज्य सरकार के ए.ए.जी. शिवमंगल शर्मा ने कहा कि चयनित अभ्यर्थियों को फील्ड पोस्टिंग नहीं दी जाए, लेकिन उनकी फील्ड ट्रेनिंग को जारी रखा जा सकता है।

इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट में चयनित अभ्यर्थियों की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी पेश हुए। सुप्रीम कोर्ट ने सभी पक्षों को सुनकर हाईकोर्ट की खंडपीठ के अंतरिम आदेश पर रोक लगा दी। वहीं हाईकोर्ट को तीन महीने में अपील का निस्तारण करने के लिए कहा। सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश के बाद वर्तमान में एकलपीठ के आदेश पर अंतरिम रोक हटी है, ऐसे में राज्यसरकार के पास भी विकल्प बचता है कि वह चाहे तो एसआई भर्ती-2021 को रद्द करते हुए आर.पी.एस.सी. से पुन: पुरानी विज्ञिप्ति के अनुसार इन्हीं पदों पर दुबारा भर्ती प्रक्रिया शुरू कर दे।

गौरतलब है कि हाईकोर्ट की खंडपीठ ने एकलपीठ के 28 अगस्त वाले भर्ती रद्द करने के फैसले पर 8 अक्टूबर तक अंतरिम रोक लगा दी थी। साथ ही एस.आई. भर्ती के चयनित अभ्यर्थियों को फील्ड पोस्टिंग देने पर पूर्व में लगी हुई रोक को बरकरार रखा था। ज्ञात रहे कि इस मामले में एकलपीठ ने 28 अगस्त को दिए फैसले में माना था कि एसआई भर्ती रद्द करना सही होगा। इसके अलावा भर्ती रद्द करने के लिए राज्य सरकार को विस्तृत रिपोर्ट बनाकर आरपीएससी में देने को कहा था।

प्रधानमंत्री आज ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लागत वाली माही-बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा परियोजना की आधारशिला रखेंगे। यह संयंत्र बांसवाड़ा जिले की छोटी सरवन तहसील के गांवों में स्थापित किया जाएगा। इसके साथ ही प्रधानमंत्री 63,683 करोड़ रुपए की स्वच्छ ऊर्जा एवं ट्रांसमिशन परियोजनाओं का शिलान्यास करेंगे।

प्रधानमंत्री 491 करोड़ रुपए की लागत से जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर में 220 केवी के 4 जीएसएस का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। प्रधानमंत्री जल संसाधन विभाग की 20,833 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का शिलान्यास करेंगे। इनमें ईसरदा से जयपुर, भरतपुर और अलवर जिलों तक फीडर निर्माण, बीसलपुर और ब्राह्मणी बैराज जैसे महत्वपूर्ण जल प्रोजेक्ट शामिल हैं।

प्रदेश में सड़क संपर्क को मजबूत बनाने के लिए प्रधानमंत्री 2636 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली सड़क और पुल परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे। राजस्थान के 11 जिलों में 5884 करोड़ की लागत से पेयजल परियोजनाएं शुरू की जाएंगी। भरतपुर में 128 करोड़ की लागत से 250 बेड के अस्पताल, जयपुर में 140 करोड़ की लागत से आईटी डवलपमेंट सेंटर, और मकराना व मंडावा में 226 करोड़ की सीवरेज व जलप्रदाय परियोजनाओं का लोकार्पण करेंगे।

प्रधानमंत्री, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बीकानेर-दिल्ली कैंट वंदे भारत, जोधपुर-दिल्ली कैंट वंदे भारत और उदयपुर सिटी-चंडीगढ़ एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री 15 हजार युवाओं को सरकारी नौकरियों के नियुक्ति पत्र देंगे। प्रधानमंत्री के इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी उपस्थित रहेंगे। यह दौरा राजस्थान के विकास में एक मील का पत्थर माना जा रहा है।

राज्यसभा की 5 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नामांकन पत्रों की जांच 14 अक्टूबर तक की जायेगी और उम्मीदवार द्वारा 16 अक्टूबर तक नाम वापस लिए जा सकेंगे।

आयोग ने बताया कि राज्य सभा की द्विवार्षिक चुनाव प्रक्रिया के तहत 24 अक्टूबर को इन सभी पांच सीटों के लिए सुबह नौ बजे से शाम चार बजे तक मतदान होगा और उसी दिन शाम पांच बजे से वोटों की गिनती का काम शुरु कर दिया जाएगा।

रेल कर्मचारियों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने बताया कि रेलवे कर्मचारियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए मंत्रिमंडल ने 10,91,146 रेलवे कर्मचारियों को 78 दिनों के उत्पादकता-आधारित बोनस के रूप में 1865.68 करोड़ रुपये के भुगतान को मंजूरी दी है। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि पात्र रेल कर्मचारियों को उत्पादकता-आधारित बोनस का भुगतान प्रत्येक वर्ष दुर्गा पूजा या दशहरा की छुट्टियों से पहले किया जाता है।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908